RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 28 फरवरी 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका मार्च 2018

मूल्य ₹ 50

कहानी एक फोटो की...!

महेश कुमार बसेड़िया

एक दिन शाम के वक्त हम लोग सरकारी नर्सरी में पौधे खरीदने गए थे। डूबते सूरज की तिरछी किरणें आम के एक पेड़ पर पड़ रही थीं। पेड़ के तने पर धूप में चमकते बरबूटे (लाल चींटे) इधर से उधर दौड़ लगा रहे थे। आम के पेड़ पर पाए जाने वाले बरबूटों से मैं बचपन से परिचित हूँ – उनकी तीखी जलन वाली काट एक-दो बार भुगत भी चुका हूँ।

उत्सुकतावश मैं अपना हाथ उनके पास लेकर जाता तो वे सजग होकर अपने एंटिना लहराकर आक्रमण की मुद्रा में थमकर खड़े हो जाते। मेरी जानकारी है कि चींटे-चींटियों की नज़र कमज़ोर होती है फिर ये कैसे इतनी फुर्ती दिखा रहे हैं?... शायद वे मेरे हाथ से हवा में होने वाले कम्पनों को अपने एंटिना से पकड़ लेते थे। बहरहाल वास्तविक कारण क्या है पता करना होगा।

उनकी सजगता और चपलता मुझे हैरान कर रही थी। उनके तेज़ी से दौड़ने के कारण उनका फोटो उतारना बहुत मुश्किल होता है, जब काटने का डर हो तो और भी ज़्यादा। फिर भी हिम्मत करके उसी दौरान मैंने अपने कैमरे से कुछ फोटो निकाले, उनमें से मेरी पसन्द की एक फोटो प्रस्तुत है।

अंक 378 मार्च 2018

चकमक

किस पर यकीन करोगे?

चित्र: शुभम लखेरा

एक दिन, एक पड़ोसी मुल्ला नसरूद्दीन के आँगन में आते दिखे। मुल्लाजी को देखकर बोले, "मुल्लाजी क्या आपका गधा कुछ देर के लिए उधार ले सकता हूँ?"

मुल्लाजी उस पड़ोसी को अपना गधा नहीं देना चाहते थे।

मुल्लाजी बोले, "अरे भाई माफ करना अभी कुछ ही देर पहले उसे किसी और को दे दिया है।" इतने में पिछवाड़े से ढेंचू ढेंचू ढेंचू...की ज़ोरों की आवाज़ आने लगी।

पड़ोसी बोला, "लेकिन मुल्लाजी दीवार के पीछे से ये आपके गधे की आवाज़ ही तो है।"

नाराज़ होकर मुल्लाजी बोले, "आप किस पर यकीन करना चाहते हैं, अपने मुल्ला पर या फिर एक गधे पर?"

इस बार

कहानी एक फोटो की...!- महेश कुमार बसेड़िया	2
किस पर यकीन करोगे?	3
रंग दे बसन्ती - नीना भट्ट	4
8 मार्च - अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	8
झाड़ू की नीति कथा - राजेश जोशी	10
नाचघर - प्रियम्वद	11
एक खोए हुए तालाब में...- सी एन सुब्रह्मण्यम्	16
पक्का, नहीं लड़ोगे! - तनिष्का	20
तुम्हारे घर में कौन... - नेचर कंज़र्वेशन फाउंडेशन	22
दो नायब शिल्प - अशोक भौमिक	24
उस दिन - वीरेन्द्र	26
रेशम रानी - कमला बकाया	28
चुप्पी जगह को चिट्ठी - विनोद कुमार शुक्ल	29
मेरा पन्ना	33
माथापच्ची	39
सिक्कों के साथ चार प्रयोग	40
चित्र पहेली	43
आ गई फसल लावनी - प्रभात	44

आवरण चित्र: नीलेश गहलोत

विशेष सहयोग - इकतारा बाल साहित्य केन्द्र

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

सम्पादकीय सहयोग
सी एन सुब्रह्मण्यम्
कविता तिवारी
सजिता नायर
भवानी शंकर
सीमा

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

एक प्रति : 50.00
वार्षिक : 500.00
तीन साल : 1350.00
आजीवन : 6000.00
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-
बैंक का नाम व पता - **स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल**
खाता नम्बर - **10107770248**
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017 फैक्स: (0755) 2551108 email - chakmak@eklavya.in, email - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

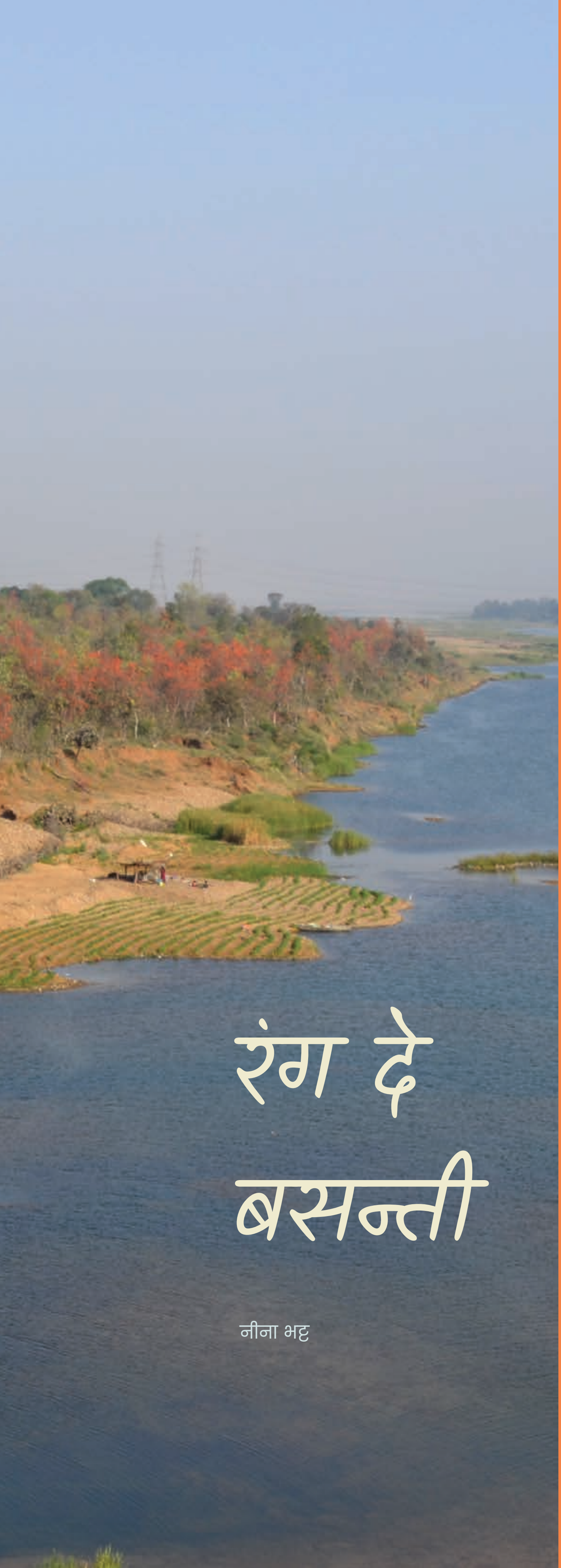

रंग दे बसन्ती

नीना भट्ट

ये उन दिनों की बात है जब हम कॉलेज में थे। अपनी एक सहपाठी की रोमांचित खुसफुसाहट ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा, "तुम्हें कुछ दिखाना है। बैग उठा लो, साइकिल से चलेंगे।" क्लास छोड़ने का रत्ती भर भी मौका मिल रहा हो तो सवाल नहीं पूछे जाते। और एक खूबसूरत बसन्त की सुबह तो बिलकुल ही नहीं। कुछ ही पल में हम साइकिल पर सवार हो फर्राटे से आर्ट प्रैक्टिकल्स की क्लास से दूर जा रहे थे।

गर्ल्स हॉस्टल के अहाते में पहुँचकर खटर-पटर करते हम जैसे ही साइकिल स्टैंड में घुसे मेरी दोस्त ने अपना सर ऊपर उठा बाँहें पसारकर कहा, "ये रहे तुम्हारे वे सारे पेड़ जिनकी बात तुम उस दिन कर रही थी!"

ज़मीन फूलों से पटी हुई थी। बसन्त को रचने वाले मशहूर जंगल की आग के टेसुओं की रंगोली। हमारे चारों ओर केसरिया से लेकर सफेद रंग की हरेक छटा में पंखुड़ियाँ व फूल बिखरे हुए थे। पीले रंग की छटाएँ, जिनका नाम हमें किसी पेंटबॉक्स में नहीं मिला था। न सिर्फ गैम्बोज, गेरुआ, हल्का पीला, हिन्दुस्तानी पीला बल्कि अनेक अनाम छटाएँ। सारे चटक रंग हॉस्टल की पाँच सौ लड़कियों की आवाजाही में पिसकर पाउडर बन गए थे।

हमारा विश्वविद्यालय विश्वामित्र नदी के किनारे पर है। यह नदी शहर के बिलकुल बीच से होकर गुज़रती है। इसके किनारे पेड़ों की घनी पाँते हैं जिनमें किस्म-किस्म के पेड़-पौधे व जीव-जन्तु मौजूद हैं। इसमें तमाम अन्य पेड़ों के अलावा धीरे-धीरे बढ़ने वाले कुछ दुर्लभ देशी पेड़ हैं। इनमें से एक है चौड़े पत्तों वाला केसुड़ा। इसके नाम अनेक हैं, पलाश, टेसू, ढाक, किंशुक...। केसुड़ा हमारे शहर और राज्य के दिल के बिलकुल करीब है।

सिर्फ वड़ोदरा में ही नहीं बल्कि देश के दूसरे कोने, पश्चिम बंगाल के शान्तिनिकेतन में भी पलाश की खास जगह है। वहाँ होली के लिए इसके फूल इकट्ठे करना एक महत्वपूर्ण परम्परा बन गया।

हम फूलों को बीनकर उसका ढेर बनाने लगे जो बाम्बी जितना ऊँचा हो चला था। हवा में ठण्ड अभी बाकी थी। हमें लगा क्यों न अपने हाथ इस जंगल की आग में सेंक लिए जाएँ।

पुराने साहित्यकारों की तरह हमने भी इन फूलों के विचित्र आकार की तुलना कभी तोते की चोंच से की, कभी शेर के नाखून से, तो कभी दूज के चाँद से। लेकिन हाथ में उठाने पर इन फूलों की पंखुड़ियाँ कितनी नाज़ुक लग रही थीं। उसके पत्ते व बीज छूने पर किसी जानवर के फर की तरह नरम लग रहे थे। और फलियाँ भी किसी बछड़े के कान की तरह नरम।

हमसे अलग, शाखों पर ऊपर बैठी चिड़ियों की नज़र सिर्फ इन फूलों के अन्दर के पराग (शहद) पर थी। ढाक के इस सालाना पराग जलसे में किस्म-किस्म के जीव आकर्षित होते हैं। लेकिन इनमें मुझे ये तीन शैतान नकलची सबसे ज़्यादा भाते हैं, कोतवाल, महालत (ट्री पाइ) और हरेवा (लीफ बर्ड)।

हरेवा जब कोतवाल पक्षी जैसी आवाज़ निकालते हैं तो उसे सुनना किसी पक्षी प्रेमी के लिए बेहद दिलचस्प होता है। और ये आवाज़ शिकरा नाम के शिकारी पक्षी की भी नकल होती है। ये कलाबाज़ी दूसरे प्रतिद्वन्द्वियों और शिकारियों को डराने के लिए होती है। यानी एक ठग दूसरे ठग के करतब अपनाता है ताकि तीसरे को उल्लू बना सके!

हालाँकि यह विज्ञान से साबित नहीं होता है, मगर इस मामले में मेरा सिद्धान्त यह है कि मीठे पराग के नशे से ज़बान पर लगाम नहीं रहती और ये तीन बदमाश और भी ज़्यादा चतुर व उद्दण्ड हो जाते हैं।

लेकिन ऐसा लगता है कि ढाक यह सब देखकर भी अनदेखा कर देता है। वो ऐसे दिखाता है मानो कि त्याग की मूरत ही हो। उससे जो केसरिया रंग निकलता है उसे भी ये वही छवि देना पसन्द करता है। ये वो वस्त्र है जो ज्ञानी पुरुष व महिलाएँ पहनते हैं। मानो वे खुद को दुनियावी तौर-तरीकों से, पैसा और नाम-यश की सांसारिक होड़ से अलग करना चाहते हों।

थोड़े संशय से, थोड़ा टेढ़ा-मेढ़ा-सा, शहर के किनारों पर, सुदूर जंगल में खड़ा केसुड़ा अपनी प्रज्ञा का दिखावा नहीं करता। इस तथ्य के बावजूद कि इसकी लाख से बने आधिकारिक सील की अनुपस्थिति में गोपनीय दस्तावेज़ों की प्रमाणिकता सन्दिग्ध हो जाए। लाख लाल रंग का एक राल होता है जो इस पेड़ पर पाले गए कीड़ों द्वारा बनाया जाता है। इसका उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है। इस पेड़ के हरेक हिस्से से कोई न कोई हर्बल दवा बनती है। सिर्फ इसके फूलों व पत्तियों से ही नहीं बल्कि इसकी गोंद से, छाल से, जड़ और बीज से भी।

हम दोनों के लिए तो यह पेड़ किताबी ज्ञान का सबसे अच्छा मारक था। इन सुलगते पेड़ों की छाँव तले हम जितना समय गुज़ारते, आर्ट स्कूल उतना ही दूर और गैर-ज़रूरी प्रतीत होता। आखिर यहाँ अवलोकन के लिए और आश्चर्यचकित होने के लिए कितना कुछ था। मिसाल के लिए पत्तों का आकार। ट्राइफोलीएट, जैसा कि वनस्पतिशास्त्र की भाषा में इसे कहते हैं। यानी हर टहनी में तीन पत्तियाँ होती हैं, चौड़ी व गोलाकार, कुछ-कुछ दिल के आकार कीं। आदिवासी इसे खाखरो कहते हैं, जिसका तात्पर्य होता है एक बड़ी रोटी जिसे खूब सेंका गया हो।

यह इस बात की तरफ भी इशारा करता है कि ताज़ी पत्तियों को जोड़कर ईको-फ्रेंडली व रिसाइकिल करने योग्य पत्तल बनाए जाते हैं।

चढ़ती दोपहरी के साथ इसकी लौ और भी तेज़ होती गई। सूरज की ज्वलन्त रोशनी इसकी पंखुड़ियों पर चमकती और ऐसा लग रहा था मानो ऊपर खिले फूल गर्मी में लहक रहे हों। हमें थोड़ी चिन्ता हुई कि हमारा पेड़ जंगल में आग न लगा दे। खुली जगह और धूप से इस पेड़ को इतना लगाव है कि कहते हैं कि यह जंगलों में किसी अनहोनी का प्रतीक होता है। लेकिन जहाँ कुछ भी नहीं बचता, वहाँ टेसू न सिर्फ खड़ा रहता है बल्कि जल्द ही अपना एक छोटा-सा जंगल ही उगा लेता है।

उस दिन हमारी नज़र जिधर जाती सिर्फ टेसू ही टेसू थे। एक लौ को बचाते हुए और उसे समूचे भूखण्ड को और आने वाली पीढ़ियों के सुपुर्द करते हुए।

परिपक्व होने में ये अनन्त-सा लम्बा समय लगाते हैं। डीलडौल में बेढंगे और छायादार कहलाने के अनिच्छुक। बल्कि जब गर्मी अपने चरम पर होती है तो ये मज़े में अपने सारे पत्ते झाड़ देते हैं। यह दुख की बात है कि टेसू सामाजिक मिसफिट है और इसे इसकी कोई परवाह भी नहीं है। हमारे शहरों को इसने त्याग दिया है और तेज़ी से छोटे कस्बों से भी दूर हो रहा है। क्या इसकी वजह यह है कि ये ऐसा वृक्ष है जो तेज़ गति की बजाय रचनात्मकता की, शान्त चिन्तन की और ज्ञान को जज़्ब करने की बात करता है?

अगर पलाश के प्राचीन वृक्ष बातें कर सकते तो वे हमें प्लासी (पलाश से निकला नाम) के युद्ध के बारे में बताते। ये रामलीला भी बेहतर दिखाते क्योंकि रामायण और महाभारत, इन दोनों महाकाव्यों में इसने भूमिका निभाई है। ये पुरानी आदिवासी सभ्यताओं के गीत गाते।

एक गुजराती गरबे की पंक्तियाँ, जो राधा और कृष्ण के मिलते-जुलते नारंगी कपड़ों का बखान करती हैं, उसकी उत्पत्ति निश्चित ही इस फूल के रंग से हुई है। इसलिए क्योंकि कृष्ण (केशव) और वह पेड़ जिसके नीचे वे बाँसुरी बजाते थे, दोनों का नाम एक ही है। कोई भी हिन्दी फिल्मी गीत सुनिए और उसमें आपको अपने पिया के रंग में रंगे होने के सूफियाना रस की प्रतिध्वनियाँ सुनने को मिलेंगी। अस्सी के दशक की सुपरहिट फिल्म का ये गाना "मेरे रंग में रँगने वाली, परी हो या हो परियों की रानी..." ऐसा ही एक लोकप्रिय गीत है। ऐसे में फिल्मों में 'पेड़ों के इर्द-गिर्द नाचने' का फैशन बहुत हाल का नहीं जान पड़ता, क्यों?

टेसू हमें रंग से सराबोर कर बसन्त ऋतु के साथ अपने प्रेमालाप का साक्षी बनाता है। वो हमें उस नृत्य की भंगिमा में खींच लेता है जिसे कुछ लोग जीवन चक्र कहते हैं तो कुछ अन्य 'गरबा'...

"म्हारा केसुड़ा ना रंग छे, केसरियो,
म्हारी चुनारी ना रंग छे, केसरियो,
म्हारा केसुड़ा ना रंग छे, केसरियो!"

अनुवाद व फोटोग्राफ: लोकेश मालती प्रकाश

चित्र : कैरन हेडॉक

४ मार्च

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

बात बीसवीं सदी की शुरुआत की है। अमेरिका के न्यू यॉर्क शहर में हज़ारों प्रवासी (दूसरे देशों से आकर बसे) यहूदी, इतालवी और अमेरिकी महिलाएँ कपड़ा सिलाई (गार्मेंट) कारखानों में काम करती थीं। उन्हें कम मज़दूरी पर बुरे हालातों में काम करना पड़ता था। वेतन बहुत कम था, मज़दूरों से सुई, धागे, मशीन और बिजली का खर्च लिया जाता था और उन्हें हफ्ते के सातों दिन 10 से 11 घण्टे काम करना पड़ता था। मज़दूर एक बार कारखाने में घुस जाएँ तो कमरों के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते थे ताकि वे बिना अनुमति बाहर न निकलें। कई बहाने बनाकर (पाँच मिनट देर से आना, कपड़े खराब करना आदि) उनका वेतन काट लिया जाता था। उन कारखानों में दो तरह के मज़दूर थे – एक जो ड्रेस का डिज़ाइन तैयार करके फर्मा बनाते थे, जो कि ज़्यादातर पुरुष दर्ज़ी होते थे। उनका वेतन अधिक था। दूसरे, बहुत कम मज़दूरी पर काम करतीं ट्रेनी महिला कामगार, जो उन फर्मों के अनुरूप कपड़े सिलती थीं। इन्हें मज़दूर का दर्ज़ा भी नहीं मिला था। वे प्रवासी कामगार थीं जो अंग्रेज़ी ठीक से बोल नहीं पाती थीं। इस कारण यूनियनें उनको संगठित करने पर ध्यान नहीं देती थीं। ज़्यादातर कामगार 12 से 22 साल की थीं।

जर्मनी में प्रकाशित 8 मार्च 1914 का इश्तेहार

बीस हज़ार का विद्रोह

1909 के जुलाई महीने से मज़दूरों व मालिकों के बीच अलग-अलग कारखानों में तनाव बढ़ने लगा और जगह-जगह हड़तालें होने लगीं। मालिक हड़तालियों को काम से निकाल देते और दूसरों को काम पर रखते। पुलिस प्रदर्शन करने वालों को बेरहमी से पीटती या उन पर भारी जुर्माना लगाती या जेल में डाल देती। इस रवैये से मज़दूरों में गुस्सा फैला और जगह-जगह आम सभाएँ हुईं। नवम्बर 1909 में एक विशाल मीटिंग में नेता लोगों के भाषण के बाद एक महिला कामगार उठकर बोलने लगीं। उन्होंने उन हालातों का बयान किया जिनमें वे सब काम कर रही थीं और माँग की कि पूरे गार्मेंट उद्योग के मज़दूरों को आम हड़ताल करना चाहिए। सब ने बड़े उत्साह के साथ हामी भरी और कसम खाई कि अगले दिन से सभी हड़ताल पर जाएँगे। लगभग 20 हज़ार महिला मज़दूरों ने अगले दो दिन आम हड़ताल की। खास बात यह थी कि उनके साथ काम करने वाले उच्च दर्ज़े के पुरुष कामगार भी हड़ताल पर गए। यह हड़ताल कमोबेश 14 हफ्ते चली। पहली बार प्रवासी मज़दूर और वो भी महिलाओं ने इतनी बड़ी हड़ताल की थी।

उन दिनों दुनिया के किसी भी देश में महिलाओं को चुनाव में वोट देने का अधिकार नहीं था। न ही वे संसद के लिए चुनी जा सकती थीं। यूरोप और अमेरिका के कई देशों में मध्यम वर्गीय महिलाओं ने वोट देने के अधिकार की माँग की और इसके लिए आन्दोलन कर रही थीं। न्यू यॉर्क की महिलाएँ जो वोट के अधिकार को लेकर आन्दोलन कर रही थीं, वे महिला कामगारों के समर्थन में उतरीं और जेल भी गईं।

अन्त में मज़दूर सफल रहे – वेतन और काम के हालात बेहतर हुए और काम के घण्टे भी कम हुए और मालिक सामग्री और बिजली की व्यवस्था खुद करने लगे। कई कारखानों में यूनियन को मान्यता भी मिली। हड़ताल को अन्ततः फरवरी 1910 में वापस लिया गया। इस हड़ताल को अमेरिकी मज़दूर इतिहास में *बीस हज़ार का विद्रोह* नाम से याद किया जाता है।

महिला दिवस की शुरुआत – 1910 से 1975

इस हड़ताल को हर साल याद करने के लिए फरवरी के आखिरी रविवार को महिला मज़दूर दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। 1910 के अगस्त के महीने में दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी महिला सम्मेलन डेनमार्क देश के कोपेनहैगन में हुआ। इस सम्मेलन में समाजवादी महिला मज़दूर नेता क्लारा ज़ेटकिन और उनके साथियों की पैरवी पर निर्णय हुआ कि हर साल अन्तर्राष्ट्रीय महिला कामगार दिवस मनाया जाएगा। इसे सारे देशों में एक साथ एक योजना के तहत मनाने का निर्णय हुआ। हर साल उस दिन यूरोप के अधिकांश बड़े शहरों में लाखों महिलाएँ प्रदर्शन करने लगीं और उनकी प्रमुख माँग थी वोट का अधिकार और समाजवाद। शुरू में यह अमेरिका के तर्ज़ पर फरवरी के आखिरी रविवार को मनाया जाने लगा। यह हर साल अलग-अलग तारीख पर पड़ता था जिस कारण 1914 से इसे 8 मार्च निश्चित किया गया।

1914 से यूरोप के सारे देश विश्व युद्ध में शामिल हुए... हर देश के कामगारों, खासकर महिलाओं को बहुत कष्ट झेलना पड़ा। उनके बच्चे सेना में भर्ती होकर मर रहे थे। ज़रूरत की चीज़ों की कीमतें आसमान छूने लगीं...

1917 में 8 मार्च के दिन रूस की राजधानी पेट्रोग्राद में हज़ारों महिलाओं ने युद्ध और राजा के खिलाफ प्रदर्शन किया और रोटी की माँग की। देखते-देखते यह राजा के खिलाफ विशाल विद्रोह बन गया और सैनिक और मज़दूर रूस के सभी शहरों में हड़ताल करने लगे। दस दिन के अन्दर राजा के शासन का अन्त हो गया। इस तरह रूस की महिलाओं ने 8 मार्च के दिन महान रूसी क्रान्ति की शुरुआत की। जब अक्टूबर 1917 को रूस में मज़दूरों का राज स्थापित हुआ तो 8 मार्च को राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाने का निर्णय किया गया। तब से हर देश के समाजवादी 8 मार्च को महिला दिवस के रूप में मनाते आ रहे थे। 1975 में यू एन ओ (संयुक्त राष्ट्र संघ) ने 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया। तब से हर साल पूरी दुनिया में 8 मार्च के दिन को महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

झाड़ू की नीति कथा

झाड़ू बहुत सुबह जाग जाती है
और शुरू कर देती है अपना काम
बुहारते हुए अपनी अटपटी भाषा में
वह लगातार बड़बड़ाती है
कचरा बुहारने की चीज़ है घबराने की नहीं
कि अब भी बनाई जा सकती हैं जगहें
रहने के लायक।

- राजेश जोशी

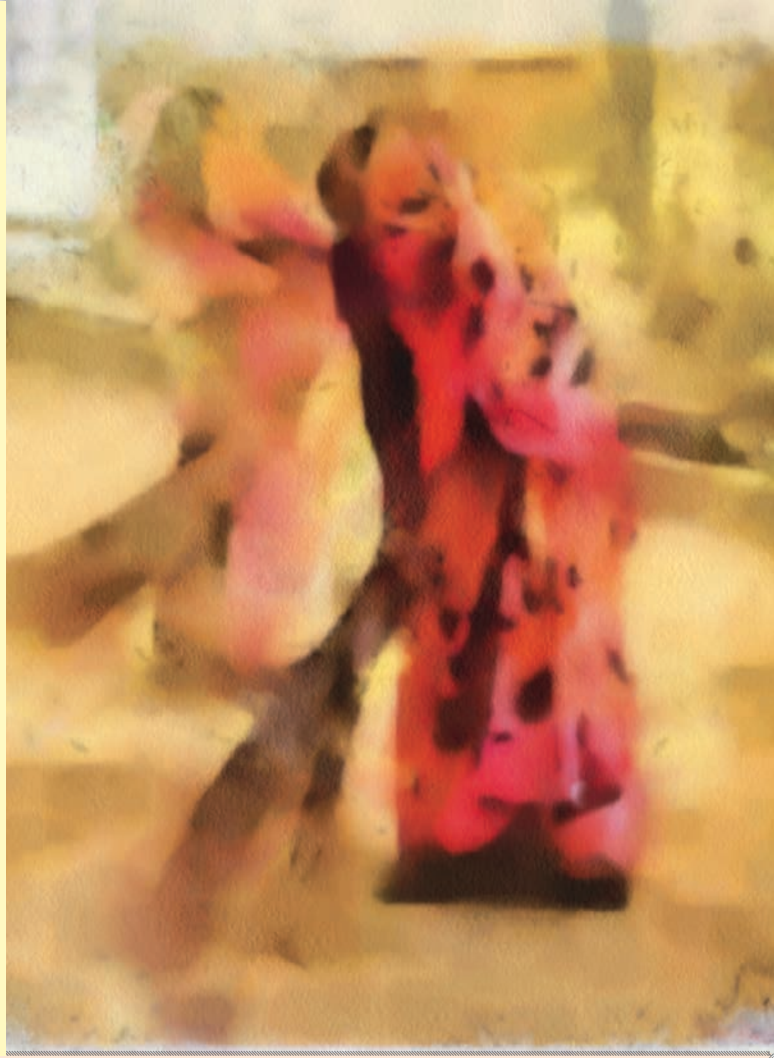

फॉर्म-4 (नियम-8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : अरविन्द सरदाना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. क़ॉलोनी,
शिवाजी नगर भोपाल 462 016

सम्पादक का नाम : सुशील शुक्ल
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
ई-10 शंकर नगर,
बी.डी.ए. कालोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल 462 016

मुद्रक का नाम : अरविन्द सरदाना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. क़ॉलोनी,
शिवाजी नगर भोपाल 462 016

उन व्यक्तियों के नाम, : रैक्स डी. रोज़ारियो
राष्ट्रीयता और पते : भारतीय
जिनका इस पत्रिका : एकलव्य
पर स्वामित्व है ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए.
क़ॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल 462 016

मैं अरविन्द सरदाना यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)
24 फरवरी 2018
अरविन्द सरदाना

पकौड़ियों में विज्ञापन

प्रियम्वद

स्कूल से निकलकर लाजवन्ती रिक्शे में बैठने लगी तो चौंक गई। ऐसा कभी नहीं हुआ। पेड़ के नीचे साइकिल लिए मोहसिन खड़ा था।

"तुम?" लाजवन्ती उसके पास आई।

मोहसिन कुछ नहीं बोला। उसने जेब से अखबार का एक टुकड़ा निकालकर लाजवन्ती को दिया। लाजवन्ती ने पढ़ा।

नाचघर के बारे में ज़रूरी सूचना -
जिसके पास चाँदी की डिबिया और बालों की लट हो फौरन पादरी हेबर या लन्दन में माइकल कॉर्नेगी से सम्पर्क करें।

नीचे एक ओर पादरी हेबर का पता, फोन नम्बर दिया था। दूसरी ओर लन्दन में माइकल का।

"तुम्हें कहाँ मिला?"

"कल पकौड़ियाँ ली थीं। तभी पढ़ा...।" लाजवन्ती ने देखा। अखबार में चिकनाई लगी थी।

"क्या है यह?" कागज़ लौटाते हुए लाजवन्ती फुसफुसाई।

"पता नहीं...शाम को नाचघर ज़रूर आना। तब बात करेंगे। यह कहने आया था।"

"ठीक है," लाजवन्ती ने सिर हिलाया। मोहसिन साइकिल पर बैठकर चला गया। लाजवन्ती भी रिक्शे पर बैठ गई।

शाम को नाचघर में दोनों ने एक बार फिर विज्ञापन पढ़ा।

"नाचघर बिक रहा है। यह ज़रूर उसी से जुड़ी कोई बात है," मोहसिन बोला।

"क्या पुलिस हमें पकड़ेगी? इसीलिए अखबार में दिया है?" लाजवन्ती ने मोहसिन को देखा।

"क्यों? हमने क्या किया है?"

"चाँदी की डिबिया और लट चुराई है।"

"पुलिस बच्चों को नहीं पकड़ती।"

"पकड़ती है। बच्चों के जज होते हैं। कोर्ट होती है...जेल होती है। हम डिबिया को वापस रख देते हैं।"

"नहीं...यह कोई और बात है, वर्ना लन्दन के लोग यहाँ इश्तहार क्यों देते?"

"फिर...? किसे बताएँ?"

"एक काम करते हैं," मोहसिन बक्से से कूदा।

"सीधे चर्च चलते हैं। पादरी हेबर को सब पता है। उन्हें पूरी बात बताते हैं। बिलकुल शुरू से। यह भी कि हम यहाँ नाचते थे...कभी पियानो भी बजाते थे। चाँदी की डिबिया, लट और तस्वीर भी हमारे पास है। अगर हमने कोई गलती की है तो डिबिया वापस करके माफी माँग लेंगे। चर्च तो अल्लाह का घर है। वहाँ सबके गुनाह माफ कर दिए जाते हैं।"

"हाँ...यही ठीक है," लाजवन्ती भी बक्से से उतर गई। "पर कैसे चलें? घर में क्या कहेंगे?"

"एक ही रास्ता है," कुछ देर सोचने के बाद मोहसिन बोला, "और वही करना पड़ेगा।"

"क्या?" लाजवन्ती ने मोहसिन को देखा।

"स्कूल नहीं जाते हैं। चर्च चलते हैं।"

"पता लगा तो?"

"नाचघर का, डिबिया का, नाचने का, नाम बदलने का किसी को पता लगा?" मोहसिन झुँझला गया, "फादर हेबर से मिलने के बाद हम घर में भी सब बता देंगे।"

"नाचघर बिक रहा है, यह भी?"

"हाँ।"

"ठीक है...तो कल ही चलते हैं।"

"मैं साइकिल से तुम्हारे स्कूल आ जाऊँगा। वहाँ से हम रिक्शे में चलेंगे।"

"और साइकिल?"

"नहीं...साइकिल से नहीं आऊँगा। कोई दोस्त छोड़ देगा।"

लाजवन्ती ने सिर हिलाया।

सुबह मोहसिन साइकिल से स्कूल नहीं गया। जाने लगा तो अम्मी ने पूछा, तो कह दिया दोस्त के साथ जाएगा। लाजवन्ती के स्कूल पहुँचकर पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। कुछ ही देर में लाजवन्ती का रिक्शा आया। रिक्शे में और बच्चे भी थे। लाजवन्ती रिक्शे से उतरी। उसने पेड़ के नीचे देखा। पीठ पर बस्ता बाँधे मोहसिन खड़ा था। लाजवन्ती की पीठ पर भी बस्ता था। जब बच्चे स्कूल के अन्दर चले गए और रिक्शा लौट गया, तब लाजवन्ती मोहसिन के पास आई।

"चलें?"

"हाँ," मोहसिन ने सिर हिलाया। उसने सामने जाते हुए एक रिक्शे को रोका। चर्च का नाम बताया। दोनों रिक्शे पर बैठ गए। सर्दियों की सुबह थी। कोहरे ने उनको अपने अन्दर छुपा लिया।

पादरी हेबर सुबह की प्रार्थना में चर्च नहीं गए थे। कुछ अस्वस्थ थे। बगीचे के फूलों को बहुत हल्का पानी देकर लौटे थे। थक गए थे। खाँसी भी आ रही थी। लेटने जा ही रहे थे कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। सुबह कोई नहीं आता था। थोड़ा अचरज के साथ खाँसते हुए उन्होंने दरवाज़ा खोला। सामने दो बच्चे खड़े थे। पीठ पर स्कूल के बस्ते थे। बदन पर स्कूल की ड्रेस थी। ठण्ड और कोहरे से उनके चेहरे गीले और मुलायम हो रहे थे। हेबर ने कुछ देर उन्हें देखा।

"क्या है मेरे बच्चों?" वह मुस्कराए।

"मेरा नाम मोहसिन है," लड़का बोला।

"मेरा लाजवन्ती," लड़की बोली।

"हमें आपसे काम है," मोहसिन ने कहा। पादरी हेबर ने एक बार उन्हें ऊपर से नीचे देखा। वे घबराए हुए थे। डरे भी। साफ था स्कूल से भागकर आए हैं।

"अन्दर आ जाओ," वे एक ओर हट गए। दोनों अन्दर आ गए। पादरी हेबर ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। वे दोनों खड़े थे।

"बताओ क्या बात है?" हेबर ने पास आकर पूछा। लाजवन्ती ने मोहसिन को देखा। मोहसिन ने जेब से अखबार का चिकनाई लगा टुकड़ा निकालकर पादरी हेबर की ओर बढ़ाया। पादरी हेबर ने दूर से ही देखा। नाचघर का विज्ञापन था।

"हमारे पास डिबिया है," लाजवन्ती धीरे-से बोली।

"लट भी," मोहसिन बोला।

पादरी हेबर अवाक उन्हें देखते रहे। कुछ देर देखते रहे। उनके इस तरह देखने से दोनों घबरा गए।

"हम लौटा देंगे," लाजवन्ती बुदबुदाई।

"तस्वीर भी," मोहसिन बुदबुदाया। दोनों अभी तक दरवाज़े के पास खड़े थे। पादरी हेबर ने अब इशारा किया।

"बस्ते उतारकर कुर्सी पर बैठो...और बिलकुल भी मत डरो।"

दोनों कमरे के और अन्दर आए। कुर्सियों पर बैठ गए। बस्ते पीठ से उतारकर कालीन पर रख दिए। पादरी हेबर उनके सामने बैठ गए। उनकी थकान, खाँसी सब गायब हो गया था।

"तो...तुम लोगों के पास चाँदी की डिबिया और लट है," वे मुस्कराए। दोनों ने सिर हिलाया।

"और तुम दोनों आज स्कूल न जाकर, यही बताने मेरे पास आए हो?"

"हाँ," दोनों ने फिर सिर हिलाया।

"क्या तुम्हें पता है तुम्हारे पास क्या चीज़ है?"

"हाँ...," मोहसिन बोला, "चाँदी की डिबिया और लट।"

"नहीं," पादरी हेबर अब खिलखिलाकर हँसे, "नहीं, तुम दोनों के पास खुल जा सिमसिम है।"

वे कुछ समझे नहीं।

"तुम लोगों ने यह बात किसी और को बताई है?"

"नहीं," लाजवन्ती बोली।

चित्र: प्रशान्त सोनी

"किसी को भी नहीं?"

"नहीं।"

"बताना भी मत जब तक मैं न कहूँ।"

उन्होंने सिर हिलाया। अब उनका डर दूर हो रहा था। कम से कम इतना डर तो दूर हो ही गया था कि पुलिस उन्हें पकड़ लेगी या उन्होंने चोरी की है।

"तुम्हें डिबिया कहाँ मिली?" हेबर ने पूछा।

"नाचघर में।"

"वहाँ कहाँ?"

"पियानो के नीचे।"

"तुम लोग वहाँ कैसे पहुँचे?"

"मैं रोशनदान से जाता था," मोहसिन बोला।

"मैं ऊपरवाले घर के बन्द दरवाज़े की सीढ़ियों से," लाजवन्ती बोली।

"तुम वहाँ रहती हो?"

"हाँ।"

"वह तो वैद्यजी का घर है।"

"हाँ...वह मेरे दादाजी हैं।"

"और तुम?"

"मैं दरगाह के सामने।"

"नाचघर में क्या करते थे?"

"नाचते थे। गाते थे।"

"क्या?"

"नील नयन चन्दन तन...केशों में केसर वन।"

पादरी हेबर की नसों का खून जम गया। उन्होंने चुपचाप दोनों को देखा।

"हमें पता है नाचघर बिकनेवाला है," लाजवन्ती बोली।

"कैसे?"

"मैं वहाँ छुपी थी जब आप आए थे।"

"अब यह कभी नहीं बिकेगा," गुमसुम से पादरी हेबर बोले।

"क्यों?"

"क्योंकि इसकी चाबी तुम्हारे पास है।"

"हमारे पास कोई चाबी नहीं है," लाजवन्ती बोली। पादरी हेबर उठ गए।

"आओ...मेरे साथ। हम सब मिलकर परम पिता का आर्शीवाद लें जो अपनी सन्तानों की मदद इसी तरह करता है।"

वे दोनों उठ गए। उन्होंने फिर बस्ते पीठ पर बाँध लिए। वे सब कमरे के बाहर आए। पादरी हेबर बीच में थे। वे दोनों उनके एक-एक ओर। हेबर का एक हाथ लाजवन्ती के कँधे पर था, दूसरा मोहसिन के कँधे पर। थोड़ा चलकर वे चैपल के अन्दर आए। चैपल खाली था। सुबह की प्रार्थना खत्म हो चुकी थी। अन्दर सन्नाटा था। गहरी शान्ति थी। वेदी के पास पहुँचकर उन्होंने मूर्ति के आगे हाथ जोड़े। उन दोनों ने भी।

"परम पिता...जिनका नाचघर था, तुमने उन्हें दे दिया। इन्हें हमेशा अपनी छाया में रखना," वह बुदबुदाए। मोहसिन और लाजवन्ती कुछ नहीं समझे। वे दोनों भी होंठों में बुदबुदाए। शायद लाजवन्ती ने गायत्री मंत्र, शायद मोहसिन ने कलमा।

"अब चलो," हेबर ने उनके सर पर हाथ रखा। वे सब चैपल के बाहर आए। फिर लॉन पार कर चर्च के बाहर आए। बाहर रिक्शा खड़ा था। वे रिक्शे पर बैठ गए। वे अभी तक ठीक-ठीक नहीं समझे थे कि क्या हुआ? उन्हें क्या करना है?

"हुआ यह कि तुम दोनों अब नाचघर के मालिक हो। करना अब तुम्हें नहीं मुझे है," पादरी हेबर खिल-खिलाकर हँसे। "नाचघर तुम्हारा है बच्चों।"

मोहसिन और लाजवन्ती की आँखें फट गईं। मुँह खुला का खुला रह गया। रिक्शा चलने के बाद बहुत देर तक वे इसी तरह अवाक फटी आँखें, खुला मुँह लिए बैठे रहे। ढेर-सी हवा, कोहरा उनके खुले मुँह में घुस गया।

जारी... चकमक

एक खोए हुए तालाब में बारिश का इतिहास

सी एन सुब्रह्मण्यम्

मध्य प्रदेश के होशंगाबाद और इटारसी शहरों के बीच एक छोटा-सा गाँव है निटाया। उस गाँव में कभी एक तालाब था जो अब लगभग खो गया है। ढूँढने पर पानी के कुछ गड्ढे दिख जाते हैं। लेकिन तालाब वहीं था, हज़ारों साल से। यह तालाब जो कि अब नहीं है, हमें एक बहुत दिलचस्प कहानी सुनाता है। यह कहानी है यहाँ की बारिश और पेड़-पौधों की।

बारह हज़ार साल पहले की बात है। तब न निटाया गाँव था न बस्ती। उस ज़माने में कड़ाके की ठण्ड पड़ती थी। सीधे हिमालय से ठण्डी हवाएँ यहाँ पहुँचती थीं। अब हिमालय से हवाएँ आएँगी तो साथ बादल तो नहीं ला सकती हैं ना, वहाँ भला कोई समुद्र थोड़े ही है। तो ठण्डी हवा और सूखा मौसम। पानी बहुत कम बरसता था। शुक्र है कि वहाँ एक बड़ा-सा गड्ढा था जिसमें बारिश का पानी भर जाता था। चारों तरफ एकदम सपाट मैदानी इलाका था। लेकिन उस मैदान में पेड़ इक्के-दुक्के ही थे, वो भी बबूल के। कुछ कँटीली झाड़ियाँ भी थीं। पूरे मैदान में तरह-तरह की घास उगी थी। तालाब के किनारे एक सँकरी-सी दलदली पट्टी थी जिस पर दलदली पौधे उगते थे। पानी में भी कुछ पौधे उगते थे।

1 खुदाई का दृश्य

2 निटाया तालाब में खिले फूल

घास चरने के लिए हिरण वगैरह आते थे। उनका शिकार करने के लिए अन्य जानवर भी आते थे, मनुष्य भी। हाँ, उन दिनों मनुष्य वहाँ शिकार और कन्दमूल खोजते घूमते थे। पास ही की आदमगढ़ पहाड़ी पर उनके डेरे लगते थे। तब वे छोटे-छोटे पत्थरों को लकड़ी या हड्डी में फँसाकर हथियार बनाते थे। कुछ घास ऐसी भी थी जिन पर मोटे बीज लगते थे, जिन्हें वे लोग इकट्ठा करके भूँजकर खाना सीख गए थे। कुछ दो-तीन हज़ार साल बाद की बात है, वे इन विशेष घासों को उगने में मदद करने लगे। वहाँ जानवरों को चरने से रोका, दूसरे पौधों को उखाड़कर हटाया। फिर...

आगे की कहानी सुनाने से पहले मैं ज़रा आपका दो खोजी लोगों से परिचय तो करवा दूँ जिन्होंने इस तालाब से कहानी खोद निकाली है। ये हैं फिरोज़ कमर और मोहन सिंह चौहान। ये दोनों वैज्ञानिक हैं और लखनऊ के बीरबल साहनी पुराजीवविज्ञान संस्थान में काम करते हैं। ये दोनों देशभर के पुराने तालाबों को खोजते हैं और उन्हें खोदकर पेंदे की मिट्टी की परतों की जाँच करते हैं और उसकी मदद से पता करते हैं कि इस तालाब के किनारे हज़ारों साल पहले कैसे पेड़-पौधे उगते थे। यह भी पता करते हैं कि कब बारिश कम हुई थी और कब अधिक, कब ठण्ड अधिक पड़ी और कब गर्मी – यानी कमर और चौहान साहब जलवायु का इतिहास भी खोद निकालते हैं।

जब इन दोनों को पता चला कि निटाया गाँव में एक प्राचीन तालाब के अवशेष हैं तो उन्होंने वहाँ पहुँचकर पूरे क्षेत्र में उगने वाले पेड़-पौधों की खबर ली। फिर गाँववालों को समझाकर उस तालाब के पेंदे में तीन मीटर का गड्ढा खोदा। खुदाई से अलग-अलग गहराई पर निकली मिट्टी के नमूने को ध्यान से थैली में बन्द करके लखनऊ ले गए। वहाँ परीक्षण में पता चला कि यह सचमुच एक तालाब के पेंदे की मिट्टी है और इसका सबसे गहरा हिस्सा आज से लगभग बारह हज़ार साल पहले वहाँ जमा हुआ था। बारिश में जब आसपास का पानी बहकर आता तो साथ में मिट्टी भी बहाकर लाता और तालाब के पेंदे में बिछा देता। इस मिट्टी में जो टहनियाँ, पत्तियाँ आदि थीं वे तो सड़-गलकर खतम हो गईं मगर पेड़-पौधों की एक निशानी आज भी बची है। यह है उनके फूलों के परागकण – पोलेन (pollen)। ये कण अत्यधिक बारीक होते हैं और आसानी से नष्ट नहीं होते।

मिट्टी से परागकण अलग करना

हर स्तर से 10 ग्राम मिट्टी लेकर उसे पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड नामक रसायन के घोल में उबाला जाता है। इससे परागकण अन्य पदार्थों से अलग हो जाते हैं और साथ ही अन्य जैविक पदार्थ गलकर खतम हो जाते हैं। फिर इसे हाइड्रोफ्लोरिक अम्ल के घोल में साफ किया जाता है। परागकण जीवाश्म हो चुके होते हैं जिस कारण इनमें सिलिका नामक पदार्थ जम जाता है। सिलिका से परागकण को अलग करने के लिए इस अम्ल का उपयोग किया जाता है। सूक्ष्मदर्शी से अवलोकन करने के लिए इन कणों को एसिटोलाइसिस नामक प्रक्रिया से गुज़ारा जाता है ताकि कण बड़े और पारदर्शी दिखें। फिर इन्हें ग्लिसरिन के घोल में रखा जाता है। विभिन्न पौधों के परागकणों को पहचानने और उनकी गिनती करने के लिए विशेष कैमरे का उपयोग किया जाता है।

अब यह बताया जा सकता है कि उस दौर में तालाब किनारे कितने तरह के पेड़-पौधे थे। कौन-से अधिक और कौन-से कम थे, आदि। ये जानकारियाँ बहुत महत्व की हैं क्योंकि इनसे हम उस समय की जलवायु का अन्दाज़ा लगा सकते हैं। जैसे कि, अगर कहीं केवल घास उगी हो और पेड़ों के निशान नहीं हों तो हम यह कह सकते हैं कि उस समय वर्षा घास लायक तो थी मगर पेड़ लायक नहीं। जो पेड़ अधिक वर्षा वाली जगहों पर होते हैं वो कम वर्षा वाली जगह या बहुत ठण्डी जगह पर नहीं होते हैं। यानी पेड़-पौधे खास जलवायु में ही होते हैं। अतः पेड़ों के प्रकार से हम समझ सकते हैं कि उस जगह उस समय बारिश अधिक थी कि कम, ठण्ड और गर्मी कैसी थी, आदि।

अब देखते हैं कि कमर और चौहान साहब ने निटाया तालाब के बारे में क्या पता लगाया।

सबसे निचले स्तर पर (यानी सतह से लगभग 225 से 240 सेमी नीचे) जो जैविक अवशेष मिले वे आज से लगभग 12,700 से 7500 साल पुराने थे। उस समय की जलवायु आज से बहुत फर्क थी। उन दिनों यहाँ घास-फूस अधिक थी और पेड़ बहुत कम। जो इक्के-दुक्के पेड़ थे वे ज़्यादातर बबूल के थे। इसका मतलब है कि उस दौर में वर्षा बहुत कम होती थी और ठण्ड अधिक थी। ठण्डे प्रदेशों में उगने वाले चीड़ और देवदार के परागकण भी पाए गए। यानी यहाँ पास में ही ऐसे पेड़ उग रहे होंगे या फिर दूर हिमालय से चलने वाली हवाओं के साथ वे

निटाया आए। पानी में या किनारे के दलदलों में उगने वाले पौधों के परागकणों के अनुपात से अनुमान लगाया जा सका है कि तालाब का विस्तार सामान्य था, न छोटा न बड़ा।

इस दौर में घास-फूस अधिक उगती थी और पेड़ कम थे। तो शायद तालाब के पास ऐसी भी घासें उगती होंगी जिनके बीजों को खाया जा सकता था। कमर और चौहान साहब ने पाया कि आज से लगभग 9000 साल पहले खाने योग्य घासों के परागकणों की संख्या में वृद्धि दिखती है। इससे वे अनुमान लगाते हैं कि शायद इस समय वहाँ रहने वाले मनुष्य खेती करने लगे हों।

फिर....

मौसम बदलने लगा। बादल उमड़-घुमड़कर आने लगे। गर्मी बढ़ी तो दूर दक्षिणी सागरों से तेज़ हवाएँ चलने लगीं। उन पर सवार होकर बादल आने लगे, बरसने लगे। यह बात है आज से 7150 साल पहले की।

तालाब में लगभग 185 से 145 सेमी नीचे वाले स्तर में अधिक वर्षा और गर्मी के इलाकों में उगने वाले पेड़ों के परागकण ज़्यादा मिले हैं। इनमे बबूल के अलावा महुआ, साज आदि सदाबहार पेड़ शामिल हैं। पानी वाले पौधों की मात्रा, खासकर सिंघाड़े की उपस्थिति से लगता है कि तालाब का आकार काफी बड़ा हो गया था। दलदली पौधे भी खूब पनप रहे थे जिससे लगता है कि बड़े तालाब के किनारे पर काफी दलदली ज़मीन भी थी। साथ ही मनुष्यों की गतिविधियों में बढ़ोत्तरी के भी प्रमाण मिले हैं। अनाज वाली घास के परागकण तो लगातार बढ़ने लगे, मगर साथ ही ऐसे पौधों की उपस्थिति भी बढ़ी जिन्हें जानवर नहीं खाते हैं। यानी कि चराई अधिक होने के कारण केवल वे ही पौधे फल-फूल पाए जिन्हें जानवर नहीं खाते थे। अनाज का बढ़ना और चराई का बढ़ना दोनों मनुष्य द्वारा खेती और पशुपालन करने की ओर इशारा करते हैं।

यानी कहानी में एक नया मोड़ आता है। बड़ा-सा तालाब, आसपास दलदल और घने जंगल। गर्मी में महुआ के फूल इकट्ठा करने और ठण्ड में पानी में डुबकी लगाकर सिंघाड़े तोड़ने के लिए बच्चों और बड़ों की टोलियाँ टोकरी लेकर घूमती हैं। यहाँ-वहाँ खेत और पालतू गाय-बकरियों के झुण्ड। दलदलों में गैंडे जैसे जानवरों का शिकार भी। कुल मिलाकर आज से 7000 से 4650 साल पहले तक मौसम सुहाना था, वर्षा पर्याप्त और न अधिक ठण्ड, न अधिक गर्मी। आदमगढ़ की चट्टानों में हम गैंडे का शिकार, इन पालतू गाय, बकरी आदि के चित्र देख सकते हैं।

आज से 4500 साल पहले जलवायु कुछ बदलने लगी – 145 से 100 सेमी की गहराई वाली परतों में वर्षा कम होने के प्रमाण मिलते हैं। तालाब शायद कुछ छोटा होने लगा था और पास के दलदल सूखने लगे थे। जंगल भी कुछ कम घना हुआ और पेड़ों के बीच खुली जगह और उनमें घासों की मात्रा बढ़ने लगी। यह परिस्थिति आज से लगभग 2800 पहले तक बनी रही।

उसके बाद (यानी, 800 ईसा पूर्व) बारिश अधिक होने लगी। जंगल फिर से घना होने लगा और उसमें उगने वाले पेड़ों में विविधता बढ़ी। सतह से 100 से 70 सेमी की गहराई वाली इस परत में पहली बार सागौन के परागकण मिलने लगते हैं। जंगल के घने होते-होते घासों की मात्रा कम होने लगी, मगर मनुष्य द्वारा खेती में किसी प्रकार की कमी नहीं दिखती है। दरअसल आज से 2800 से 1150 साल पहले (यानी, 800 से 850 ईसा पूर्व) खेती के फैलने के प्रमाण मिलते हैं। बारिश के बढ़ने के साथ और खेती के विस्तार के कारण शायद मिट्टी कटकर तालाब में जमा होने लगी और तालाब के इर्द-गिर्द दलदल-सी बनती गई। दलदल में उगने वाले पौधों की मात्रा अधिक दिखने लगती है।

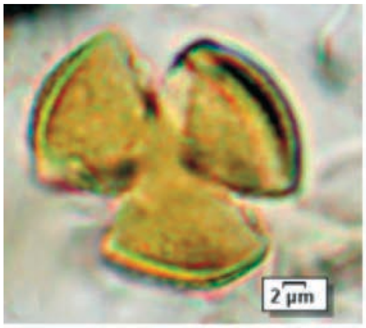

3 सागौन

4 बबूल

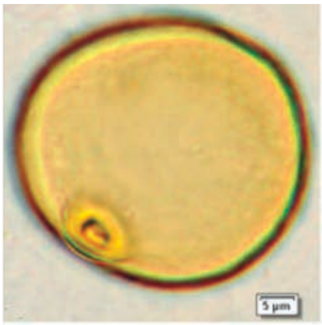

5 घास

6 अनाज

8 आदमगढ़ कूबड़ वाला बैल

10 उरडेन का शैल चित्र – फसल की कटाई

11 आदमगढ़ बकरी

इन हज़ार सालों में लोगों के जीवन में बेहद बुनियादी परिवर्तन आने लगे। आदमगढ़ के चित्र और वहाँ पर उत्खनन से मिली सामग्री इसके साक्ष्य हैं। गंगा घाटी से नर्मदा घाटी की ओर राजा-महाराजाओं के घुड़सवार सैनिक आए। राजा-महाराजा खुद हाथियों पर सवार होकर आए। उनका सामना यहाँ के छोटे समुदायों से हुआ। राजाओं की हुकूमत नर्मदा घाटी पर बनी और यहाँ के लोग उन राजाओं को लगान और जंगली उत्पादन पहुँचाने लगे। अब उन पर खेती बढ़ाने का दबाव बना।

अब लौटते हैं तालाब पर। सबसे ऊपरी परत (सतह से 30 सेमी गहराई वाली) के अध्ययन से पता चलता है कि पिछले हज़ार-बारह सौ सालों में पहले से कुछ कम वर्षा होती रही है मगर आजकल के हिसाब से सामान्य। तापमान भी पहले से कुछ अधिक गरम हुआ है। साथ ही खेती के लिए घने जंगल कटे हैं और खुले मैदान खेत बने हैं। जो पेड़ बने रहे, वे ज़्यादातर महुआ और बबूल के हैं। खेती के चलते तालाब भी पुरा गया और उस पर खेती होने लगी। अब उसका अंशमात्र बचा हुआ है। लेकिन ज़मीन के नीचे जलस्तर ऊँचा होने के कारण तालाब के आसपास दलदल बना रहा। पिछले हज़ार साल का इतिहास तो हम जानते ही हैं। पुराने आदिवासी समाज यहाँ से खदेड़ दिए गए हैं। उनकी जगह पूर्ण रूप से खेती पर आधारित समाज यहाँ आकर बसे हैं और अपनी आजीविका यहाँ की मिट्टी से पा रहे हैं। चकमक

7 भीमबैठका गैंडे का शिकार

टीवी - कितना दूर कितना पास

पक्का, नहीं लड़ोगे!

तनिष्का

हमारा घर पहली मंज़िल पर है और उसके ऊपर खुली छत भी है। हम सब एक कमरे में ही रहते हैं, उसी घर में एक कोने में टेबल पर टीवी रखा है। उसके सामने बेड रखा है, जिस पर बैठकर हम टीवी देखते हैं। मेरी मम्मी ने एक कपड़ा बुना था, उसे उन्होंने टीवी के ऊपर रख दिया। मम्मी रोज़ टीवी को कपड़े से साफ करती हैं। और उसे बिलकुल नया बनाकर रखती है।

मेरे घर में जब मैं छोटी थी तभी से टीवी है, पर बुरी बात यह है कि वो तभी से खराब पड़ा था। पर जब मैं दस साल की हुई तो मम्मी ने टीवी ठीक करा दिया। टीवी ठीक हो जाने की खुशी तो थी पर टीवी की वजह से हम बहन-भाइयों में रोज़ लड़ाई होने लगी। दीदी को मस्ती चैनल पर गाने सुनना अच्छा लगता है, तो वो कहती मैं गाने सुनूँगी तो भैया कहते मैं सीआईडी देखूँगा और मुझे CN पर रॉल नम्बर 21 देखना होता था, तो मैं कहती मैं कार्टून देखूँगी, ऐसे ही हममें रोज़ लड़ाई होती। एक दिन मम्मी को गुस्सा आ गया और उन्होंने कहा "अब से टीवी कोई नहीं देखेगा। अब टीवी बन्द रहेगा।।" उस दिन किसी ने भी टीवी नहीं देखा। मम्मी ने टीवी बन्द करा दिया तो लगा घर में कोई नहीं है। अगर टीवी में गाने चल रहे होते तो सभी मस्ती में आ जाते। अगर कोई सीरीयस प्रोग्राम चल रहा होता तो अगर कोई टीवी के पास भी न होता तो वो भी टीवी में क्या चल रहा है, ये जानने की कोशिश करता। उस दिन जब मम्मी ने टीवी बन्द किया तो दीदी ने गुस्से में खाना भी नहीं खाया। क्यूँकि टीवी देखे बगैर उसका खाना पचता कहाँ था!

फिर हमारी यह हालत देखकर मम्मी को हम पर तरस आ गया। और मम्मी ने कहा, "अब से मैं टाइम बना रही हूँ। तनिष्का सुबह स्कूल जाती है तो सुबह टीवी शिवम देखेगा और दिन में शिवम स्कूल जाता है तो तनिष्का टीवी देखेगी। शिवानी दिन में पार्लर जाती है, तो शाम को टीवी वो देखेगी।।समझे! अब अगर किसी ने लड़ाई की, तो मैं हमेशा के लिए इस टीवी का बक्सा बन्द कर दूँगी। सब अपने ही टाइम पर टीवी देखेंगे।" उस दिन से तो लड़ाई नहीं हुई पर संडे के दिन मेरे स्कूल की छुट्टी होती है और भैया की भी और दीदी के पार्लर की भी। संडे के रोज़ फिर लड़ाई होती। फिर मम्मी ने हमे डाँटा कि जैसे मैंने टीवी देखने का टाइम बनाया था संडे के दिन भी वैसे ही देखोगे। हमने कहा ठीक है मम्मी। उस दिन भी हममें लड़ाई नहीं हुई, पर उसके अगले दिन फिर वही चिकचिक।

एक दिन मैं टीवी देख रही थी तभी अचानक टीवी फूँक गया। फिर मम्मी ने भी उसे ठीक नहीं कराया। दो-तीन दिन बाद हमने मम्मी से कहा, "मम्मी टीवी ठीक करा लो।" तो मम्मी ने कहा, "नहीं अब मैं इसे ठीक नहीं कराऊँगी, तुम लोग फिर लड़ोगे।" हमने मम्मी से कहा, "मम्मी हम अब नहीं लड़ेंगे, प्लीज़ टीवी ठीक करा लो।" तो मम्मी ने मुस्कराते हुए पूछा, "पक्का नहीं लड़ोगे?" हमने कहा, "पक्का पक्का! हम नहीं लड़ेंगे!" फिर मम्मी ने टीवी ठीक करा लिया और हम मम्मी के बनाए टाइम से टीवी देखने लगे। और फिर हममें कभी लड़ाई नहीं हुई। पर जब भी दीदी या भैया टीवी देखते तो लगता कि रिमोट छीनकर खुद टीवी देख लूँ।। पर हम मम्मी के सामने कभी लड़ाई नहीं करते। क्यूँकि अगर मम्मी को पता चलता तो मम्मी फिर टीवी बन्द करवा देती। अब तो टीवी के बगैर रहना नामुमकिन सा लग रहा था। क्यूँकि जब भी टीवी खराब होता तो लगता जैसे घर का कोई सदस्य दूर हो गया हो... क्यूँकि जैसा दुख घर के सदस्य से दूर होने का होता है वैसा ही टीवी के खराब होने पर भी होता है। टीवी भी घर के सदस्य की तरह लगता है। एक दिन मैं टीवी देख रही थी तभी उस पर एक अजीब-सा चैनल आ गया। मैं उसे देखने लगी टीवी में जो लोग दिख रहे थे वो कुछ अजीब-सी भाषा में कुछ कह रहे थे। मुझे उनकी भाषा समझ तो नहीं आ रही थी, पर उसे देखने में मुझे बहुत मज़ा आ रहा था। तभी मम्मी छत से कपड़े उतारकर आई, तो मम्मी ने कहा, "यह क्या देख रही है? तुझे कुछ समझ भी आ रहा है?" तो मैंने कहा, "मम्मी मुझे इसकी भाषा तो समझ नहीं आ रही, पर देखो ना कित्ती हँसी आ रही है।" जब मम्मी ने देखा तो मम्मी को भी हँसी आने लगी। इसके पहले मम्मी कब टीवी देखती है, कितना देखती है, मैंने इस पर ध्यान ही नहीं दिया था। फिर मम्मी भी मेरे पास ही बैठ गई और मैं और मम्मी बहुत देर तक वो प्रोग्राम देखते रहे। मुझे मम्मी को टीवी देखकर बहुत खुशी हो रही थी। अब तक तो हमने सोचा ही नहीं था कि मम्मी का भी टीवी देखने का मन करता होगा।

इतने में दीदी आई और मुझसे रिमोट छीना और फिल्म लगाकर देखने लगी। मैंने कहा, "मुझसे रिमोट क्यूँ छीना और वो प्रोग्राम क्यूँ हटाया?" तो दीदी ने कहा, "तुझे कुछ समझ भी आ रहा था उस प्रोग्राम में?" मैंने कहा, "समझ नहीं आ रहा तो क्या हुआ, लेकिन देखो मुझे और मम्मी को कितनी हँसी आ रही है।" दीदी ने चिढ़ते हुए कहा कि चुप बैठी रह और मुझे फिल्म देखने दे। मैंने भी कहा लो अब तुम्हीं टीवी देखो, ये कहकर मैं अपनी सहेलियों के साथ नीचे खेलने चली गई। चक मक

परिचय

11 साल की तनिष्का, राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, ई ब्लॉक, नंद नगरी, दिल्ली-93, छठीं क्लास की छात्रा हैं। पाँच सालों से अंकुर की नियमित रियाज़कर्ता है। इन्हें कहानियाँ पढ़ना और लिखना पसंद हैं।

चित्र: नीलेश गहलोत

तुम्हारे घर में कौन-कौन रहता है?

घर में मेरे साथ रहते हैं...

तुम्हारे घर में तुम्हारे साथ कौन-कौन से जीव रहते हैं? कितने जीव उसी छत के नीचे रहते हैं? यदि तुमने खुद को, अपने परिवार के सदस्यों और पालतू जानवरों को गिनने के बाद गिनती बन्द कर दी हो, तो एक बार फिर सोचना।

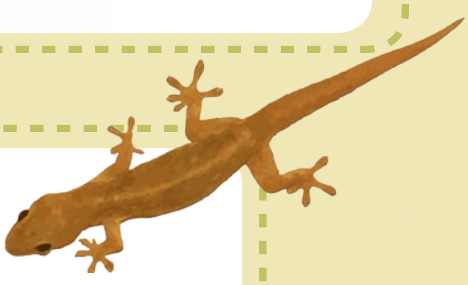

फील्ड डायरी

चलो पता करते हैं कि तुम्हारा घर जैव विविधता का कैसा अड्डा है। तो क्यों न तुम्हारे घर की तलाशी हो जाए? हाथ में एक डायरी और एक पेंसिल ले लो और अपने घर व बगीचे का चक्कर लगाओ। यदि तुम किसी बड़ी इमारत के फ्लैट में रहते हो तो अपने फ्लैट और इमारत के आसपास चक्कर लगाओ और इमारत की साझा जगहों (जैसे सीढ़ियों और बगीचे) में भी ताक-झांक करो। फर्श, दीवारों, कोने-नुक्कड़ों की खाक छानो। जब भी कोई सजीव दिखे, अपनी डायरी में नोट करो और उसका थोड़ा विवरण भी लिखो। क्या कोई ऐसी भी चीज़ मिली जिसे तुम नहीं पहचान पाए?

यदि जीवों को पहचानने में मदद की ज़रूरत हो तो हमें उसका थोड़ा विवरण, चित्र या फोटो भेजो।

अपने घर की जैव विविधता की तुलना अपने दोस्त के घर से करो। क्या उनमें कोई अन्तर है? तुम्हारे ख्याल में इस अन्तर के क्या कारण हो सकते हैं?

हॉटस्पॉट

शायद तुमने कहीं सुना या पढ़ा हो कि जैव विविधता के हॉटस्पॉट होते हैं। हॉटस्पॉट उन क्षेत्रों को कहते हैं जहाँ अन्य जगहों के मुकाबले जीवों की ज़्यादा किस्में पाई जाती हैं और साथ ही उन पर खतरा मँडरा रहा होता है कि शायद वे खत्म हो जाएँगे। आम तौर पर इनमें से कुछ जीव (छोटे-बड़े जन्तु या पौधे) कहीं और नहीं पाए जाते। खतरा यह हो सकता है कि उन्हें अपने जीवनयापन के लिए मिलने वाली जगह कम होती जा रही हो। या हो सकता है कि वे जिस तरह के जंगलों या घास के मैदानों में रहते हैं, उनमें बदलाव आ रहा हो। या शायद वहाँ कोई बीमारी फैल रही हो या उनका शिकार किया जा रहा हो।

दक्षिण भारत का पश्चिमी घाट जैव विविधता का एक हॉटस्पॉट है। यदि सिर्फ पेड़-पौधों की बात करें, तो यहाँ 5000 अलग-अलग किस्म के पेड़-पौधे पाए जाते हैं और 1500 किस्में तो सिर्फ यहीं पाई जाती हैं।

हमें चकमक के पते पर लिखकर बताओ कि क्या तुम अपने घर की जैव विविधता को बदलना चाहोगे और क्यों? तुम कौन-से जीवों को हटाना चाहोगे या जोड़ना चाहोगे। और ऐसा कैसे करोगे?

अपने विचार हमें भेजो!

nature conservation foundation

नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन द्वारा विकसित

दो नायाब शिल्प

अशोक भौमिक

पिछले अंकों में हमने बुद्ध की कुछ नायाब उपवास मूर्तियों पर बात की थी। विश्व मूर्तिकला के इतिहास में बुद्ध के अलावा भी अनेक मूर्तियाँ मिलती हैं, जहाँ लोगों की शरीर-रचना (anatomy) को इस ढंग से तराशा गया है कि हम उनमें भूखों या अकाल पीड़ितों को देख पाते हैं। गरीबी और अकाल का लम्बा इतिहास है और विश्व मूर्तिकला भी इसका साक्षी रहा है।

विश्व की इन उत्कृष्ट मूर्तियों पर कम चर्चा हुई है, शायद इसलिए कि ये राजाओं-महाराजाओं की न होकर अनाम, आम स्त्री-पुरुषों की मूर्तियाँ हैं!

आज हम कुछ ऐसी ही मूर्तियों को बिना किसी सन्दर्भ के 'देखने' की कोशिश करेंगे।

चित्र 1

प्राचीन इजिप्ट (मिस्र), दीवारों पर उकेरी मूर्तियों (relief) के लिए उतना ही विशिष्ट है जितना अपने पिरामिडों के लिए। दीवारों पर उकेरी हुई ऐसी ही एक प्राचीन मूर्ति में हम कुछ अकाल पीड़ितों को देख पाते हैं। यहाँ इन भूखे स्त्री-पुरुषों की शरीर-रचना हमें आश्चर्यचकित करती है क्योंकि यह अकाल से पीड़ित लोगों का कोई यथार्थ चित्रण नहीं है। इन लोगों का सिर, शरीर के अनुपात में काफी बड़ा है। उन सभी के गर्दन के नीचे का हिस्सा न केवल चौड़ा ही है, कमर के पास शरीर अस्वाभाविक सँकरा भी है। इसके अलावा इनकी पसलियाँ सीने पर न होकर कमर के पास हैं। इन विशेषताओं के चलते इस मूर्ति में हम प्राचीन इजिप्ट की कला की खास शैली को पहचान पाते हैं, जो आज से तीन हज़ार सालों से भी ज़्यादा प्राचीन होते हुए भी अपनी संरचना में 'आधुनिक' लगती है।

इस मूर्ति का एक और दिलचस्प पक्ष है!

इजिप्ट, विश्व की सबसे लम्बी नदी - नील नदी के किनारे बसे होने के कारण, हज़ारों सालों से उपजाऊ ज़मीन और कृषि के अपने उन्नत तरीकों के लिए जाना जाता रहा है, इसलिए यह मान लेना कठिन है कि यहाँ कभी अकाल भी पड़ा होगा। कई इतिहासकारों का मानना है कि यह मूर्ति, इजिप्ट की न होकर किसी अन्य देश के अकाल का चित्रण है। बहरहाल, चित्रण किसी देश का क्यों न हो, यह चित्र अपनी सादगी और शरीर-रचना के अभिनव प्रयोग के लिए हमें आकर्षित करता है, और हम इसे किसी देश, काल, स्थान या किसी घटना से जोड़े बगैर भी इसके कला गुणों से परिचित हो पाते हैं।

चित्र 2

ऐसी ही एक टेराकोटा (मिट्टी की पकाई गई) मूर्ति अमरीका के मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम में संरक्षित है। यह मूर्तिपटल पाँचवीं सदी में कश्मीर इलाके में बनी थी। ऐसा लगता है कि गीली मिट्टी पर साँचे को दबाकर इसे तैयार किया गया है।

यह मूर्तिपटल ऊपर से नीचे, तीन हिस्सों में बँटी दिखती है। सबसे ऊपरी हिस्से में हम स्त्री-पुरुषों के जोड़ों को देख पाते हैं जो न केवल खुश दिखते हैं, अपने भरे-भरे चेहरों से काफी स्वस्थ भी लगते हैं। मूर्ति के सबसे नीचे के हिस्से में कमल के फूलों से भरा एक सरोवर है, जहाँ उल्लास में पंख फड़फड़ाते हुए कुछ हंस हैं। इन दोनों हिस्सों के बीच के अंश में हमें दो लोग दिख रहे हैं, जिनके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं है और शरीर-रचना से वे बेहद कमज़ोर दिखते हैं, साथ ही उनके बालों की बनावट भी भिन्न है।

जालीदार मुँडेर के पीछे बैठे (या खड़े?) चार लोगों के शरीर का केवल ऊपरी हिस्सा ही दिख रहा है जो पूरी मूर्ति की संरचना में एक नया आयाम जोड़ता है। यहाँ मूर्तिकार ने केवल शरीर के ऊपरी हिस्से के ज़रिए ही लोगों को दिखाया है, जबकि चित्र में अन्य आकृतियों (हंस, कमल और दो कमज़ोर लोग) का पूरा चित्रण किया गया है। इसके साथ-साथ इस मूर्तिपटल में दो विपरीत भावों (हर्ष और विषाद) को हम एक साथ देख सकते हैं, जो निश्चय ही किसी बड़े मूर्तिकार की सृजनशीलता का प्रमाण है।

इन दोनों मूर्तियों को अगर आप ध्यान से देखेंगे तो निश्चय ही आप को और कई नई बातें दिखेंगी। एक मूर्ति को समझने के लिए, उसकी भव्यता को अनुभव करने के लिए बस उसे 'देखना' ज़रूरी है। चित्रकला को देखने के इस नज़रिए को अपने अन्दर हम खुद ही विकसित कर सकते हैं।

उस दिन

वीरेन्द्र दुबे

गाँव के बच्चे तालाब में कूद-कूदकर नहा रहे थे।

नावें तालाब के बीच तैर रही थीं। उनमें बैठे लोग सिंघाड़े तोड़ रहे थे।

अचानक तालाब का पानी बर्फ की तरह जम गया।

नहाते बच्चे हक्के-बक्के रह गए। तैरना भूलकर पानी की सतह पर दौड़ने लगे। उनके दाँत किटकिटा रहे थे। नावें जहाँ की तहाँ ठिठककर रह गईं।

उघारे-पुघारे बच्चों ने दौड़कर गाँव में खबर दी। वहाँ तिलमिला देने वाली लू चल रही थी।

खबर फैलते ही हर कोई तालाब की तरफ दौड़ पड़ा। तालाब को घेर लिया।

ठण्डी हवा के हल्के झोंके चलने लगे।

शाम तक आसपास के गाँवों की भीड़ जमा हो गई। मेला लग गया।

लू ठण्डक में बदलने लगी।

भीड़ की गर्मी से तालाब की बर्फ पिघलने लगी। सबेरे तक तालाब ठण्डे पानी से लबालब भर गया।

नहाने वालों को काबू में करने वालों के पसीने छूट गए।

सिंघाड़े से भरी नावों के एक-एक सिंघाड़े तक लोगों के बाँटे नहीं आए इतनी भीड़ थी।

यह सब चमत्कार कैसे हुआ? हर कोई बस यही एक चर्चा कर रहा था।

चित्र: मयूख घोष

Mayukh '18

रेशम रानी

कमला बकाया

कहती कोको एक कहानी
एक लड़की है रेशम रानी।

गिटपिट-गिटपिट बात बनाती
हाथ हिलाती, मुँह मटकाती।

आती है वह बाल बिखेरे
कंघी करती नहीं सवेरे।

खूब मचाती चीखा-चिल्ली
लड़की है कि बागड़ बिल्ली।

चित्र: अतनु रॉय

चुप्पी जगह को चिट्ठी

विनोद कुमार शुक्ल

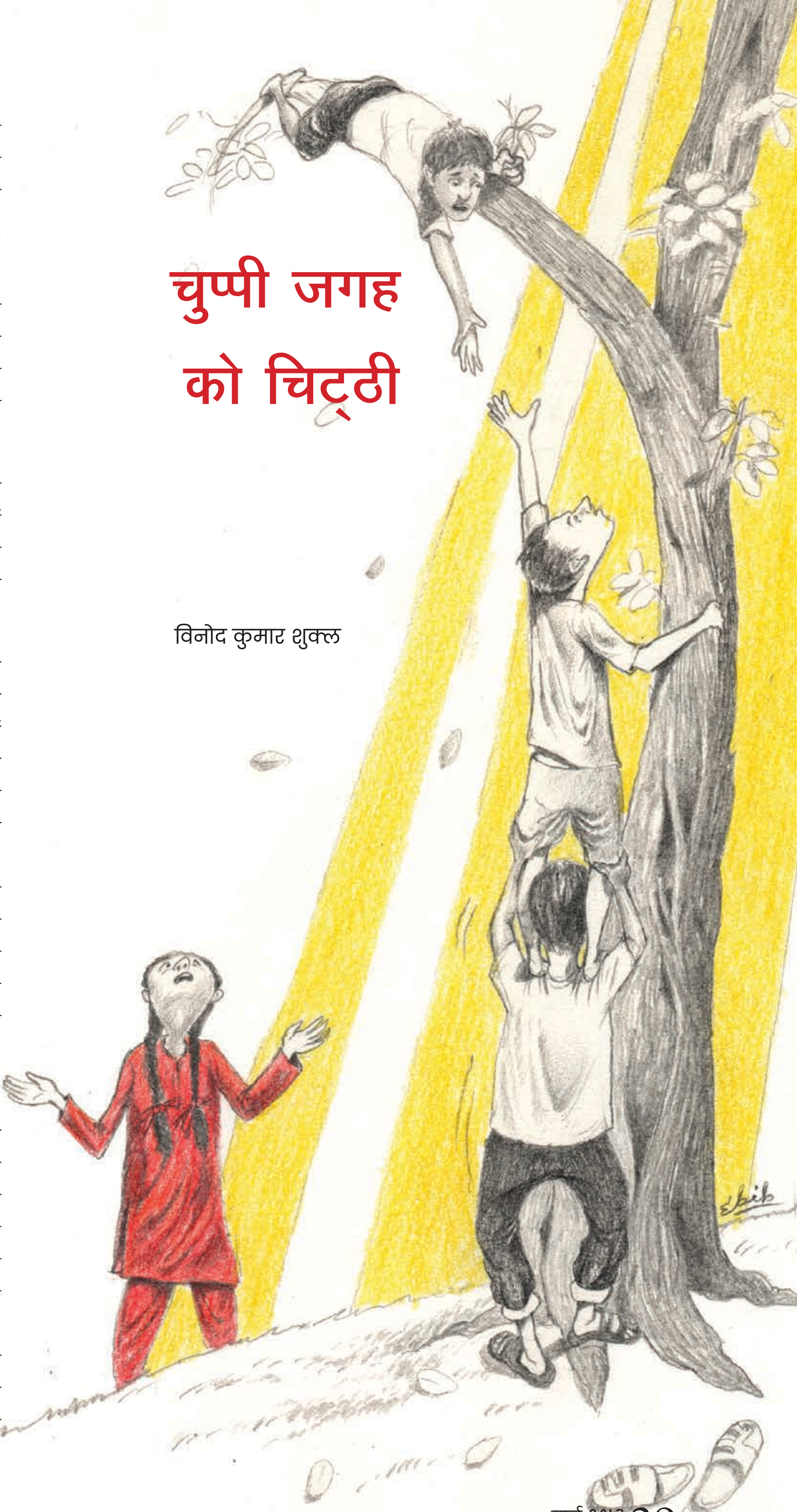

प्रकृति बड़ी आविष्कारक है। उसका एक बड़ा आविष्कार मनुष्य है। प्रकृति ने कितने आविष्कार किए इसकी गिनती नहीं। और मनुष्य ने प्रकृति को कितना नष्ट किया, इसकी भी गिनती नहीं।

मौन सबके मौन की तरह है। चाहे वह छोटू का मौन हो या लम्बे डगवाले लड़के का। पशु-पक्षी का मौन मनुष्य के मौन की तरह था। मौन रहकर प्रकृति के और नज़दीक चले आते हैं।

देखू की दृष्टि में ध्यान से देखना रहता था। वह सूक्ष्मदर्शी था। जो दूसरे देख नहीं पाते थे, देखू देख लेता। देखू, बोलू से बड़ा था। बोलू अपने अधिक बचपने के साथ बड़ा हो रहा था।

चुप्पी बहरी जगह में साल के पेड़ भी बहुत थे। साल का एक बड़ा पेड़ जो नाले के किनारे था उसकी बहुत-सी शाखाएँ नाले के उस पार के किनारे तक चली गई थीं। कुछ शाखाएँ नाले के पार हैं, ऐसा भी लगता था। जो शाखाएँ चुप्पी जगह पार कर गई हैं उसमें भी पक्षी बैठे होते। लेकिन, चिड़ियों के कलरव से यह पता नहीं चलता था कि कलरव में उस डाल पर बैठी चिड़ियों का भी हिस्सा है। प्रेमू ने इस बात का पता लगाने का बीड़ा उठाया। पेड़ पर चढ़कर वह चुप्पी वाली जगह को ऊपर ही ऊपर पार कर, डाल पर बैठे बोलेगा। उसका कहा सुनेंगे तो पता चलेगा।

प्रेमू दुबला-पतला था। पेड़ पर चढ़ने की उसकी आदत थी। पेड़ पर चढ़कर वह उस शाखा पर आ गया था जिसका छोर चुप्पी जगह को पार कर चुका था। खिसकते हुए गहरी खाई वाली नदी के ठीक ऊपर पहुँच गया। पेड़ के सारे पक्षी उड़ गए। पक्षी उड़कर इस तरफ गए या उस तरफ हुए, इस पर किसी का ध्यान नहीं गया। सबका ध्यान केवल प्रेमू की तरफ था। देखू का भी ध्यान प्रेमू की तरफ था। प्रेमू ने एक पतली

सूखी डाली तोड़ी और उसे ऊपर से छोड़ दिया। टुकड़ा खाई के बीचोंबीच नीचे चला गया। प्रेमू आगे खिसकता तो आगे पतली होते जाने के कारण डाल थोड़ा नीचे झुक जाती। और झुककर नाले के तरफ ज़्यादा हो जाती। तब भी प्रेमू आगे खिसकता गया। एक हाथ आगे फैलाकर देखता गया कि क्या हाथ खाई के पार हुआ या नहीं। वह सावधानी से बढ़ रहा था। उसने फिर एक सूखी टहनी तोड़ी और उसे सीध में नीचे गिराया। वह टुकड़ा भी खाई में गया। वह आगे खिसकता गया। डाल और अधिक झुकती जा रही थी। वह थोड़ा-थोड़ा खिसक रहा था।

सुबोध ने कहा, “प्रेमू कुछ बोलो।”

ऐसा लगता ज़रूर कि वह बोल रहा है। पर वह बोल नहीं रहा था। उसका सारा ध्यान अपने को बचाने और अपने को आगे खिसकाने में था। अचानक डाल कुछ ज़्यादा झुक गई। तब प्रेमू, भैरा की तरफ कूद जाने को सोच रहा था। पर पेड़ की डाल पर लेटे जैसे खिसकते हुए उछाल के लिए उसके पास कोई सहारा नहीं था। यदि वह डाल से हाथ छोड़ता तो सीधे नीचे गिरता। प्रेमू को डाल के तड़कने की आवाज़ नहीं आ रही थी। किसी को नहीं। पर प्रेमू को लगने लगा था कि उसकी यह डाल कहीं से टूट रही है। वह हिम्मत नहीं हारा था। हवा चलने लगी थी। ज़ोर की चलने लगी। सब सन्न खाए हवा से प्रेमू को हिलता-डुलता देख रहे थे। भैरा के कन्धे पर देखू चढ़ गया और प्रेमू के नज़दीक जाकर उसके हाथ को पकड़ लेना चाहा। हवा के तेज़ चलने से प्रेमू झुकी डाल में और झूलने लगा। थोड़ा देखू की तरफ होता, कभी पीछे नाले की तरफ हो जाता। अचानक हवा का एक बड़ा झोंका आया और प्रेमू ने देखू के फैले हाथ को आसानी से पकड़ लिया। तभी देखू को लादे भैरा गिर पड़ा, प्रेमू सहित सभी धड़ाम से गिर पड़े। जब गिर पड़े तब खुशी से चिल्लाए। प्रेमू जब तक डाल पर रहा डरकर वह बोल नहीं पाया या उसका बोलना सुना नहीं गया। और इसी बात को जानने वह चढ़ा था। बात जानी नहीं गई।

प्रेमू ज़मीन पर कुछ देर पड़ा रहा। फिर उठ गया। सब खुश थे कि कुछ बुरा नहीं हुआ। प्रेमू को बचाने के लिए सब लोग कुछ न कुछ सोच रहे थे। यह भी सोचा गया कि जैसे पेड़ का पुल बनाया गया है वैसे वे लोग खाई के दोनों तरफ ज़मीन पर लेटे हाथ पकड़कर पुल बना सकते हैं या नहीं। सबसे पीछे वाले लड़के लेटकर अपने पैर पेड़ से बँधवा लेते। पर रस्सी नहीं थी। लम्बे डगवाला लड़का होता तो वह अकेला काफी था। वह प्रेमू को कन्धे पर बैठाकर पेड़ की डाल पकड़ा देता। दोनों किनारे के पेड़ पर रस्सी बाँधकर भी प्रेमू झूलते हुए नाले को पार कर बोलता और नाले के पार होते ही अपने बोल को सुन या सुना सकता था। पर रस्सी नहीं थी। धैर्य भी नहीं था।

वातावरण शान्त था। थोड़ी देर बाद उन्हें हरकारे की घण्टी की आवाज़ आई। हरकारा आ रहा था। देखू ने देखा हरकारा भी एक लड़का था। शायद अपने पिता के बदले चिट्ठी बाँटने निकला हो। उसके पिता की तबियत खराब हो! हरकारा, कूना के रोकने से रुक गया। वह धोती पहने था। नीले रंग की फीकी पड़ गई कमीज़ थी। कमर में एक घुँघरुओं वाला पट्टा था। हाथ में डण्डा था। डण्डा बड़ा था। पिता का ही डण्डा हो। सिर पर नारंगी रंग के अँगोछे को लपेटा था। वह अँगोछे में नर कोयल के चिट्टीदार पंख खोंसे हुए था। और खुँसा हुआ मादा कोयल का काला पंख भी था। लड़का हरकारे की वेशभूषा में अच्छा लग रहा था। थक गया था। उसके कन्धे पर बोरे का बना एक छोटा थैला टँगा था। रुका हुआ भी वह खड़े-खड़े उचक रहा था जैसे उसे जल्दी है।

“क्या बात है, ठीक से रुक क्यों नहीं जाते? सुस्ता लो,” कूना ने उसे उचकते देख कहा।

उचकते-उचकते उसने कहा, “मुझे जल्दी है। चिट्ठी पहुँचानी है। तुमको बात करना है तो मेरे साथ दौड़ते चलो। मुझे रोको मत।”

“हम यहीं खड़े-खड़े उचकते हुए थोड़ी देर तुमसे बात करेंगे और तुम्हारा साथ देंगे,” कूना बोली।

सब उसे घेरकर उसी की तरह उचक रहे थे। इस साथ के उचकने में घण्टियों की आवाज़ के कारण उचकने का नृत्य लग रहा था।

लड़के ने कहा, “मुझे बाबूलाल महराज की चिट्ठी पहुँचानी है। पिता ने कहा था खरगोश के बिल में चिट्ठी डाल देना। पर मैं उनसे बिल का पता पूछना भूल गया।”

बोलू ने उचकते हुए कहा, “जहाँ भी तुम्हें किसी खरगोश का बिल दिखे उसी बिल में डाल देना।”

हरकारे ने कहा, “मुझे बिल बता दो कहाँ है?”

“चलो!” सब ने कहा।

हरकारे के साथ सब दौड़ते जा रहे थे।

सुबोध ने कहा, “देखू, देखो तो बाबूलाल महराज की होटल खुली है क्या?”

देखू ने चारों तरफ देखा। बाबूलाल होटल नहीं दिखी। और वे उस जगह पहुँच गए थे जहाँ प्राय: बाबूलाल होटल खुलने पर दिखती है। पर देखू ने खरगोश का एक बिल देखा। सबने एक-दो, एक-दो बिल देखे। हरकारा लड़का बिल के पास बैठ गया। उसने थैले से चिट्ठियों का बण्डल निकाला। बाबूलाल महराज की एक छोटी-सी हरे रंग की चिट्ठी थी। लड़के ने बिल में उसे डाल दिया। सबने बिल में चिट्ठी डालते उसे देखा। जब हरकारा खड़ा हुआ तो बिल में चिट्ठी नहीं थी।

हरकारे ने कहा, “मैंने तो चिट्ठी बिल में डाल दी।”

कूना ने कहा, “हाँ, हम सबने देखा।”

सुबोध ने कहा, “मेरे घर की चिट्ठी हो तो मुझे यहीं दे दो।”

हरकारे ने कहा, “होगी तो दे दूँगा।”

बोलू ने कहा, “तुम जाओ। हम भी जाएँगे।”

हरकारे ने कहा, “थोड़ी देर मैं रुकूँगा। पिताजी ने कहा था कि रुकना। जवाब आ जाएगा। उसको भी पहुँचाना।”

कूना ने कहा, “उनका घर बहुत दूर है। और पता नहीं कहाँ होंगे!”

देखू ने कहा, “लो जवाब आ गया।”

बिल के मुहाने एक पीले रंग की चिट्ठी थी। हरकारे ने उसे बण्डल के साथ रख लिया और वह दौड़ते हुए चला गया। उसकी घण्टी की आवाज़ कुछ देर आती रही।

बोलू ने कहा, “मेरे मन में एक विचार आ रहा है कि क्यों न हम लोग चुप्पी जगह को चिट्ठी लिखें। और चुप्पी जगह से कहें कि चुप्पी तोड़ दे। जवाब की प्रतीक्षा करें और जानें कि

चुप्पी जगह को क्या परेशानी है। या जवाब में चुप्पी जगह से बोलने की आवाज़ सुनने में आ जाए।"

"हाँ, यह हो सकता है," भैरा ने कहा।

"चिट्ठी लिखकर किसको दोगे?" चन्दू ने पूछा।

"किसी पेड़ को दे देंगे। यानी पेड़ के नीचे रख देंगे," भैरा ने कहा।

कूना ने भैरा से कहा, "तुम जंगली भैंसे को चिट्ठी दे देना।"

इस पर सब ने गम्भीरता से विचार किया और निर्णय लिया –

1. जगह को चिट्ठी लिखनी है
जगह में जो हैं
चिट्ठी उन सब की होनी है।

2. एक लम्बी-चौड़ी जगह को
एक छोटी-सी चिट्ठी
क्या होगा उसका असर?

3. जगह भी क्या पढ़ती होगी?
जगह में स्कूल होती है
और स्कूल में सब की जगह
होती है।

4. जगह के बदले जो जवाब दे
वह भी जगह का जवाब होगा
उस जवाब को
जगह की जगह का
जवाब मानेंगे।

5. चुप्पी जगह, कहना-सुनना
अब तक तो बेकार हुआ
मौखिक कुछ नहीं हुआ
जो होगा
लिखित होगा।

चित्र: हबीब अली

6. जगह को चिट्ठी लिखने
जगह की शिला पर लिखेंगे
टहनी पेंसिल से लिखा
वह शिलालेख होगा।
जगह ने चिट्ठी लेने से इन्कार किया तो
वापस नहीं लेंगे
शिला ज़मीन में धँसी रहेगी
उसे चस्पाँ रहने देंगे।

जारी...

आँखों देखी

एक दिन मैं और मेरे पापा, मम्मी और मेरी दीदी शाम के पाँच बजे घूमने गए थे। घूमने के बाद आते वक्त हम लाल गेट तक पहुँचे तो बहुत ट्रैफिक था। तभी एकदम से पुलिस ने सीटी बजाकर दाईं तरफ के वाहनों को रुकने को कहा। तभी एक कार के आगे एक स्कूटर खड़ा था। तभी जैसे ही कार वाले ने ब्रेक मारा तो स्कूटर वाले अंकल स्कूटर पर से गिर गए। तभी वहाँ पर भीड़ लग गई। मेरे पापा ने जैसे ही देखा तो मेरे पापा ने उन अंकल को उठाया और उनके स्कूटर को भी उठाया। जब पापा ने गाड़ी को उठाकर रखा तो एक आदमी आकर उस गाड़ी को ले जाने लगा तभी मेरे पापा उस आदमी के पीछे जाकर उस गाड़ी को लाए।

संतुष्टि बावस्ककर, चौथी, केन्द्रीय विद्यालय देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: घनश्याम, सातवीं, केन्द्रीय विद्यालय, भुज, गुजरात

चित्र: इनामुल्ला, पाँचवीं, अजीम प्रेमजी विद्यालय माटली, उत्तराखण्ड

उसका दोस्त बाघ था

एक मेरा नाथ था
उसका दोस्त बाघ था
बाघ बहुत था अच्छा-अच्छा
मन था मेरा कच्चा-कच्चा
लोगों ने ली बात ठान
भगाओ-भगाओ इस बाघ को
लगता है हमें इससे डर
अगर नही भगाया तो जाएँगे मर
इसलिए बाघ को छोड़ना पड़ा
दोस्ती की डोर को तोड़ना पड़ा |

राधेपाल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरा पन्ना

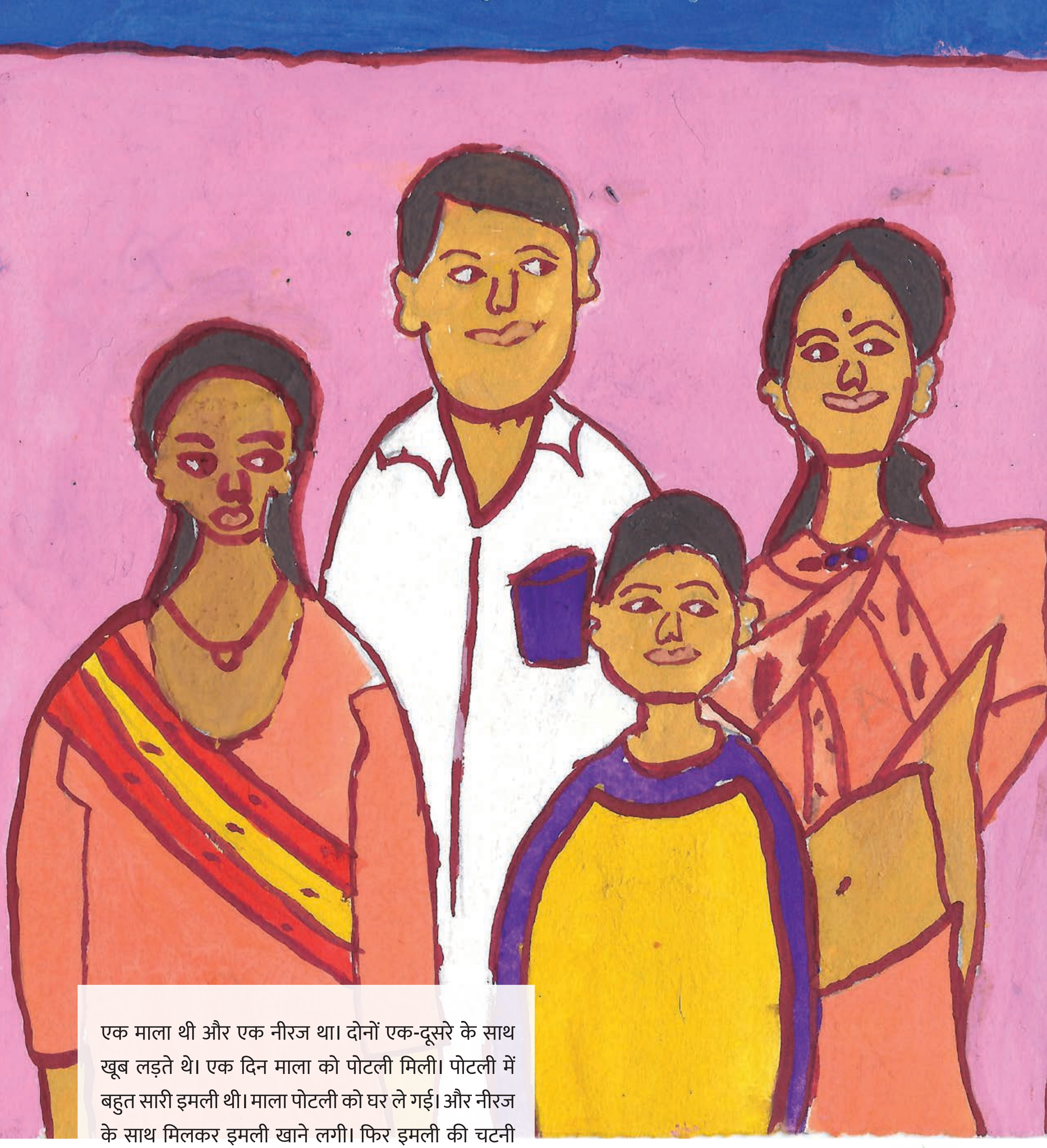

एक माला थी और एक नीरज था। दोनों एक-दूसरे के साथ खूब लड़ते थे। एक दिन माला को पोटली मिली। पोटली में बहुत सारी इमली थी। माला पोटली को घर ले गई। और नीरज के साथ मिलकर इमली खाने लगी। फिर इमली की चटनी बनाई और दोनों मिलकर इमली की चटनी खाए।

रागिनी, मुस्कान संस्थान भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: स्नेहा, धारावी आर्ट रूम मुम्बई, महाराष्ट्र

मेरा सबसे प्यारा खिलौना मुझे मेरा हाथी बहुत पसन्द था। जब भी मेरी मम्मी बाहर जाती थीं तो मैं हाथी से ही बात करती थी। पता नहीं तुम कहाँ गए। मेरे घर आने पर मुझे मिले ही नहीं। मैं अभी भी बहुत रोती हूँ जब मम्मी बाहर जाती हैं।

-कीर्ति बरेठा, आठवीं, सरोजिनी नायडू उ.मा.विद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: देव, किन्डरगार्डन, इधा फाउंडेशन

चित्र: इशित, ग्यारह साल , विद्यालय शिक्षांतर, गुड़गाँव, हरियाणा

मदरसे की दोस्ती

एक दिन की बात है मैं गुलड़ीय गई थी। वहाँ मेरी बड़ी माँ के घर गई थी। तो अम्मी बोलीं बेटा मदरसे जा तो मैं मदरसे गई। और मुझसे कोई भी नहीं बोला। तभी मैं फिर एक दिन मदरसे नहीं जाना चाह रही थी। तो अम्मी बोलीं जा तो मैं रो-रोकर गई। तभी मैं वहाँ पढ़ने लगी और हजरत बोले सब पानी पीने जाओ तो सब पानी पीने गए। तो मैं पानी पी रही थी तो एक लड़की बोली ऐ लड़की इस टंकी से पानी मत पी। और मैं हजरत के पास गई और मैंने सारी बात बताई तो हजरत बोले कोई बात नहीं। तुम और किधर से पानी पी लो। फिर मैं मदरसे में चली गई और पढ़ने लगी। और बच्चे भी पढ़ रहे थे। तभी अचानक एक चमगादड़ आ गया और सारे बच्चे डरने लगे तो मैंने सोचा कि एक दिन अम्मी कह रही थीं कि अगर चमगादड़ आ जाता है तो बच्चों को बैठा देते हैं। और मैंने वही कहा कि सारे बच्चों बैठ जाओ। पर कोई नहीं बैठा। फिर चमगादड़ बच्चों के सिर पर बैठ रहा था। मैंने चिल्लाकर कहा कि देखो मैं बैठी हूँ तो कोई चमगादड़ मेरे पास नहीं आ रहा है। तो सारे बच्चे बैठ गए। फिर चमगादड़ भाग गया और सारे बच्चे बोले तुम्हें हम गलत समझे। तुमने हमारी जान बचाई। थैंक यू। फिर मदरसे के हजरत बोले तुम बहुत अच्छी हो। और फिर सब अपने घर चले गए। मैंने घर जाकर अम्मी को सारी बात बताई और अम्मी को भी खुशी हुई। मेरी बड़ी मम्मी ने कहा बेटी तुम ऐसे ही अपनी सहेलियों की जान बचाना। फिर हम सब अपने घर वापिस आ गए।

-सम्मो बी, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सितारगंज- 2, उत्तराखण्ड

चित्र: रेजिना, किन्डरगार्डन, इधा फाउंडेशन

चित्र: सोनू मालवीय, चौथी, एस बी आश्रम, उज्जैन, मध्य प्रदेश

हाथी और चींटी

एक हाथी था। वह कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे एक चींटी मिली। उसने पूछा, “हाथी भाई कहाँ जा रहे हो?” हाथी घमण्डी था। वह चींटी से बोला, “तुम अपने काम से काम रखो मैं कहीं भी जाऊँ।” चींटी ने कहा, “हाथी भाई मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। अगर आपको कोई परेशानी हुई तो मैं आपके काम आऊँगी।” हाथी बोला, “तू मेरे क्या काम आएगी? अपनी चिन्ता कर।” चींटी ने ज़्यादा ज़िद की तो हाथी उसे साथ ले गया। रास्ते में बहुत तेज़ तूफान आया। चींटी और हाथी एक गुफा में घुस गए। तूफान से बहुत से पत्थर पहाड़ी से गिरने लगे। पत्थर गिरने से गुफा का मुँह बन्द हो गया। हाथी ने पत्थर हटाने की कोशिश की लेकिन उससे पत्थर नहीं हटे। चींटी ने कहा, “तुम परेशान मत हो। मैं कुछ करती हूँ।” चींटी पत्थरों के बीच से बाहर आई और जंगल से बहुत से हाथियों को ले आई। सब हाथियों ने मिलकर पत्थर हटा दिए। तब से दोनों दोस्त बन गए।

-ईश्वरनाथ, रा. उ. प्रा. विद्यालय टाडावाड़ा, सोलंकियान, राजसमन्द, राजस्थान

माथापच्ची

बिन पंखों के उड़ता है
बिन आँखों के रोता है

(बादल)

1. ऐनी के पास 5 डिब्बों में कुल 39 बटन हैं। तीन डिब्बों में बराबर-बराबर बटन हैं। एक डिब्बे में उतने ही बटन हैं जितने कि इन 3 डिब्बों में मिलाकर हैं। और आखिरी डिब्बे में पहले तीन डिब्बों में से एक के आधे बटन हैं। हरेक डिब्बे में कितने बटन हैं?

2. रेहान के पास 25 घोड़े हैं जिनमें से वह सबसे तेज़ दौड़ने वाले 3 घोड़ों को चुनना चाहता है। उसके पास केवल 5 ट्रैक हैं यानी कि एक बार में वह केवल 5 घोड़ों की दौड़ करा सकता है। उसके पास घोड़ों की वास्तविक गति नापने का कोई साधन नहीं है। सबसे तेज़ दौड़ने वाले 3 घोड़ों का चुनाव करने के लिए उसे कम से कम कितनी दौड़ें करानी होंगी?

3. सारा के कमरे में एक चौकोर खिड़की है जिसकी ऊँचाई व चौड़ाई 1 मीटर है। उससे बहुत रोशनी आती है। वह चाहती है कि खिड़की के आधे हिस्से को इस तरह बन्द किया जाए कि नई खिड़की भी चौकोर ही हो और उसकी लम्बाई व चौड़ाई 1 मीटर हो। क्या तुम उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

4. जब कोई व्यक्ति अपने दाएँ हाथ में पानी से भरी एक बालटी उठाता है तो वह बाईं ओर थोड़ा-सा झुक जाता है। भला क्यों?

5. फटाफट बताओ कि -
जब कोई कार आगे की ओर चलती है तो उसके आगे के पहिए घड़ी की दिशा में घूमते हैं या घड़ी की विपरीत दिशा में?

इस बार की माथापच्ची पहेलियों को हल कैसे करें ? जाने पेज 41 पर

सुडोकू

दिए हुए बॉक्स में 1 से 4 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 4 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराएं न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको चार डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 4 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है करके तो देखो, जवाब अगले अंक में तुमको मिल जाएगा।

सुडोकू-5

	4		
		2	
		3	
1			

सुडोकू-4 का जवाब

4	1	2	3
2	3	4	1
3	2	1	4
1	4	3	2

सिक्कों के साथ चार प्रयोग

दोस्तो, तुम इन सरल प्रयोगों को करके देखो और हमें लिख भेजो कि क्या हुआ और तुम्हारे अनुसार ऐसा क्यों हुआ। तुम्हारे उत्तरों पर हमारे विज्ञान सलाहकार अपनी राय देंगे।

1. कितने सिक्के?

सामग्री: पानी से भरा हुआ एक गिलास और सिक्के

पानी से पूरी तरह भरा हुआ एक गिलास लो।

यदि तुम इसमें 1 रुपए का एक सिक्का डालो तो क्या गिलास से पानी बाहर निकलेगा? करके देखो। (सिक्के को ध्यान से डालना ताकि पानी बाहर न छलके।)

क्या गिलास में और भी सिक्के डाले जा सकते हैं (पानी छलके बिना)? अनुमान लगाओ कि तुम पानी में ऐसे कितने सिक्के डाल सकते हो? यही प्रयोग साबुन के पानी के साथ भी करके देखो।

2. सिक्का गायब

सामग्री: एक सिक्का, पानी से भरा हुआ एक गिलास

इसे तुम अपने दोस्तों के साथ भी आज़मा सकते हो। एक सिक्के को अपनी हथेली पर रखो। अब सिक्के के ऊपर पानी से लगभग भरा हुआ एक काँच का गिलास रखो। अपने दोस्तों को गिलास के ऊपर से देखने को कहो। उन्हें पानी के अन्दर सिक्का दिखाई देगा। अब सिक्के को गायब करने के लिए अपने दूसरे हाथ से गिलास को ढँक लो। और अपने दोस्तों से पूछो कि क्या उन्हें सिक्का अब भी दिखाई दे रहा है?

3. पैसे को दुगुना करना

सामग्री: एक सिक्का, पानी से भरा हुआ एक साफ गिलास और एक प्लेट

पानी से आधे भरे हुए एक साफ काँच के गिलास में एक सिक्का डालो। गिलास के ऊपर एक साफ प्लेट रखो ताकि और कोई चीज़ गिलास के अन्दर या बाहर ना जा पाए। अपने एक हाथ में गिलास को रखो और दूसरे हाथ से प्लेट को अच्छी तरह दबाओ। अब गिलास और प्लेट को एक साथ उलट लो। सिक्का अभी भी गिलास में ही रहेगा लेकिन अब प्लेट को छूते हुए रहेगा। अब गिलास के नीचे की ओर साइड से देखो। क्या हुआ? यह दूसरा सिक्का कहाँ से आया? अचरज में पड़ गए ना!

4. कागज़ का पुल

सामग्री: दो किताबें, कागज़ की पट्टी और सिक्के

दो किताबें लो। उनके ऊपर कागज़ की पट्टी को इस तरह रखो जैसे कि वह दो किताबों के बीच का पुल हो।

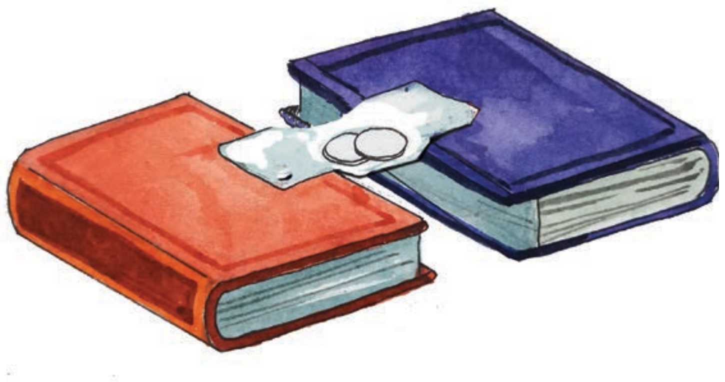

अनुमान लगाओ कि यह पुल 1 रुपए के कितने सिक्कों का भार उठा पाएगा? करके देखो। क्या हुआ? पुल एक भी सिक्के का भार नहीं उठा पाया? अब कागज़ को चित्र में दिखाए तरीके से मोड़ो। अब यह नया पुल कितने सिक्कों का भार उठा पाएगा?

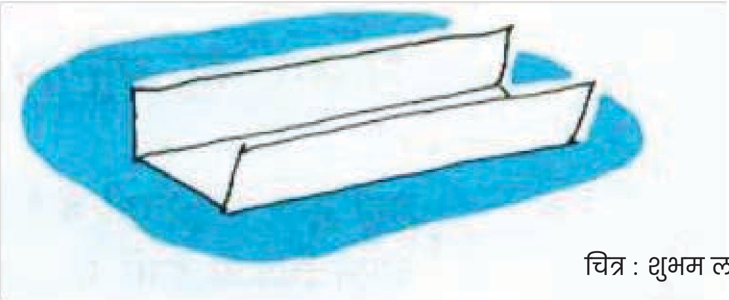

चित्र : शुभम लखेरा

इस बार की माथापच्ची पहेलियों को हल कैसे करें?

1. मान लेते हैं कि पहले डिब्बे में जितने बटन हैं वे x हैं। इस तरह हमारे पास तीन डिब्बे हैं यानी उनमें कुल बटनों की संख्या $3x$ हुई।

चौथे डिब्बे में इन तीनों के बराबर बटन हैं यानी $3x$ हैं।

पाँचवें डिब्बे में पहले डिब्बे के आधे बटन हैं यानी $1/2x$ हैं।

पाँचों डिब्बों में मौजूद बटनों को जोड़ें तो $3x + 3x + 1/2\ x$ हुआ। यानी $6.5\,x$ हैं। कुल बटनों की संख्या हमें बताई गई है जो कि 39 है।

यानी $6.5\,x = 39$ है। यानी x को 6.5 से गुणा करने पर 39 बनेगा। तो अगर हम 39 को 6.5 से भाग देंगे तो एक x के बराबर होगा।

यानी $x = 39/6.5 = 6$ हुआ।

अब वापस डिब्बों में जमाकर देखें तो पहले तीन डिब्बों में 6-6 बटन, चौथे डिब्बे में $3x$ 6 यानी 18 बटन और पाँचवें में 6 का आधा यानी 3 बटन हैं। इन्हें जोड़ें तो 6 + 6 + 6 + 18 + 3 = 39 हैं।

2. **घोड़ा दौड़** सबसे पहले पाँच-पाँच घोड़ों को दौड़ाएँगे जिससे पाँच दौड़ में हमें पाँच तेज़ घोड़े मिल जाएँगे। इनमें से कौन सबसे तेज़ है यह जानने के लिए इन पाँचों को एक बार दौड़ाएँगे और विजेता को अलग कर लेंगे। 25 में से यह सबसे तेज़ घोड़ा होगा। इस छटी दौड़ में दूसरे व तीसरे नम्बर में आए घोड़ों को अलग कर लेंगे। मगर हो सकता है कि सबसे तेज़ दौड़ने वाले घोड़े की टीम के दूसरे और तीसरे नम्बर के घोड़े इन दोनों घोड़ों से तेज़ हों। इसलिए उन्हें भी इन दो घोड़ों के साथ दौड़ाएँगे। इन चार घोड़ों में से जो पहले और दूसरे होंगे उन्हें हम 25 घोड़ों में से दूसरे और तीसरे नम्बर के तेज़ घोड़े मान सकते हैं। इस तरह से हम सात दौड़ों में तीन सबसे तेज़ घोड़ों को पहचान सकते हैं।

3. **खिड़की** इस तरह आधी खिड़की बन्द करेंगे।

मुख्यमंत्री से जुड़ने का उनसे सीधे संवाद बनाने का
एक और सशक्त डिजिटल माध्यम
शिवराज सिंह चौहान
एप्प
Madhya Pradesh
Shivraj Singh Chouhan
Presentation of Radha Krishna Raaslila at
Lakhs of People will plant saplings on ban...
Home
Event
In Media
Speeches
Message From CM
Profile
Feedback
Media Coverage
Watch LIVE
Google Play
से डाउनलोड करें
जल्द ही...
आइओएस पर भी उपलब्ध
Follow Chief Minister Shivraj Singh Chouhan
/ChouhanShivraj
/ChouhanShivraj
/ChouhanShivrajSingh
D82783 11.01.2018

चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20

आ गई फसल लावनी

प्रभात

आ गई फसल लावनी
आ गई फसल लावनी

कड़ी धूप से तेज़ हवा से
हरी फसल में लाली
ना काटो तो झड़ जाएँगी
पकी-पकी सब डाली
आ गई फसल लावनी
आ गई फसल लावनी

फसल काटने चली खेत
ले ले हाथों में हँसिया
रूपी-धूपी मजदूरिन
गाती जाती है रसिया
आ गई फसल लावनी
आ गई फसल लावनी

बतरस ले ले काट रही है
खेत मालकिन रस्सो
चार पाँत ले सबसे आगे
है मजदूरिन जस्सो
आ गई फसल लावनी
आ गई फसल लावनी

कटे पड़े में पड़ी हुई कुछ
गेहूँ की लम्बी नड़ियाँ
सिला बीनने आईं लड़कियाँ
नभ से उतरी चिड़ियाँ
आ गई फसल लावनी
आ गई फसल लावनी

चित्र: कैरन हेडॉक

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: सुशील शुक्ल